सेनगी सुसुन कजिगी दुरंग्

इकिरन उड़ुःपहम गमु आद नगड़ा भजन दुरंग् को दार्शनिक चिन्तन काव्य एवं नगड़ा भजन गीत

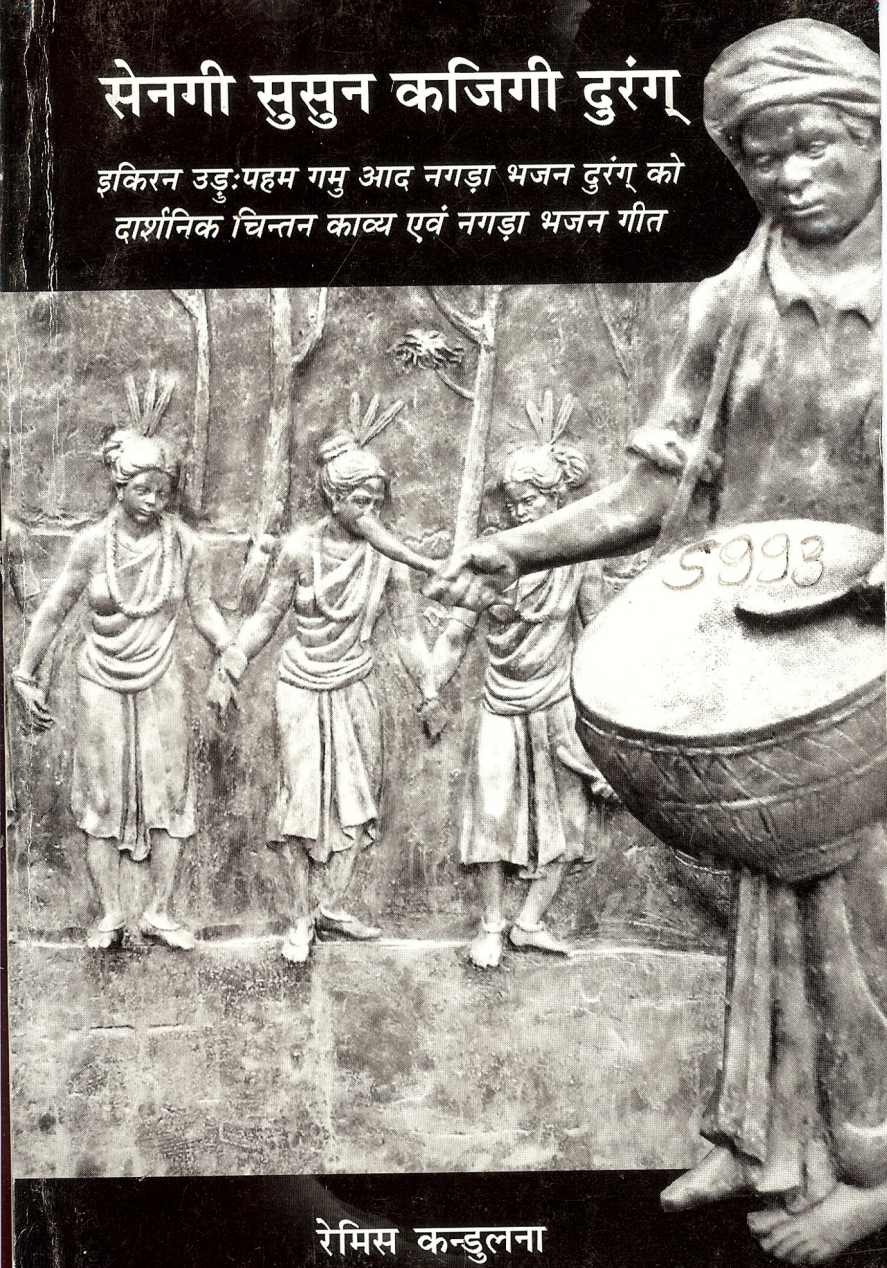

रेमिस कन्डुलना

सेनगी सुसुन कजिगी दुरंग्

मुन्डारी - हिन्दी

इकिरन उड़ुःपहम गमु आद नगड़ा भजन दुरंग को
दार्शनिक चिन्तन काव्य एवं नगड़ा भजन गीत

ओलसोतोः ओलवेद्
रेमिस कन्डुलना, हगापरचारः पअःबुड्अः, सोड्अः

अनुवादक व संपादक
रेमिस कन्डुलना

संवाद
301/ए, उर्मिला इन्कलेव
पीस रोड, लालपुर, रांची

पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं।

प्रकाशन वर्ष : 2016

प्रति : 500

मुख्य पृष्ठ चित्र : बिजू टोप्पो

प्रकाशक : संवाद, 301/ए, उर्मिला इन्क्लेव, पीस रोड
लालपुर, रांची - 834001

मुद्रक : कैलाश पेपर कन्वर्शन प्रा.लि., रांची

सीमित प्रसार

नगरा सुसुन दुरंग् सिदा बरिया कजि

हिलिञ मुसिंग् हुलंग् सेरेंग् चेतन सेहेल रे बाबा रूडुंग्–रूडुंग ते दुरंग् तइन केनाए। इमतंग् गे अइंग् एन पड़ उरिज् गुपिइंग् हार जद्को तइन केना। दुरंग् मजा लेकाए दुरंग् तइन केना। दुरंग् अयुम केद् मिसा दो तेलाइंग् मोने केना। मेनदो अयर रेअः डाटा दो बोड़ा कन लेका ते कइंग्अः जना। दुरंग् रूअड़ तद् रेदो होनंग् थोथोड़–बोथोड़ते एना मेनेद्गे कइंगअः जना। एन हिलिंग्अः दुरंग् आद् मोचा रेअः राग दो मिरू सालु मैना लेका। गड़ा जपअः सेरेंग् हुदु तन सड़ि तइन केना। इमिन रेओ दुरंग् अइंग् ओनव केदा। बुरू चेतन चितिरि किन दो, बेड़ा लतर असाकल किन, चिअः चितिरि कम अड़ागुना रे, चिअः चितिरि कम नोसोरेन। एन तयोम ते ओड़ओ एटअः तेयअःइंग् अयुम केदा, तिलासरी बाबा चिरे तिरिल तुकु, रूडुंग–रूडुंग तेगी सिंगि दोरे डुबुजे जना। टुन्डु रे ओड़ओ मिसाए दुरंग् तद् चि मिसाइंग् ओनाव केदा ''गड़ा रेमा चिरे, बेड़ा रेमा फेनिगा 'मोचा तेचि, कटा तेम रेंयों–रेयोंया। तयोम हुलंग् एन दुलाड़ हिलिंग् के कुलिगिइंग् मोने केदा। इतिना हिलि! बाबाम रूडुंग तइना एन बेड़ाम दुरंग् लेद्, दुरंगकोदंग् होनंग्अम उदुबाइंग्ते। अइंग् बनि हुंडिया। कजि अयुम केद् चि मेताइंग् तना, ओचोया कोड़ा काइंग् सरिया? दादाम के कुलि में इनिः गे बुगि लेकाए उदुबा मेंया। एला हिलि दादाइंग् दो चिकायम मेता दिइंग्अः। एना ते अमगी मर उदुबइंग्में। सिदा दोए गियुः जना। मेनदो इरिल कोड़ाको नेल लेको रे हिलिको ओड़ोगे को सिरिम सिरिम कोआ। एन तयोम दुरंग् दिइंग्अए। ओड़ोओए मेतादिइंग्अः, हिजुः पीट होई कोड़ा, दुई अना रेअः चुड़ि किरिंग् अइंग्में। हेइ मेनतेंग कजियाजा। मेनदो चुड़ि चिलिकाइंग् किरिंग् एअः? बलए रेंग् ठोःयना। अइंग्तअःमिद् डिबुओ कअ तइन केना। गड़ा पड़ अइंग् सेनोःयना आद् दिरि चेतन टुकु रे दुब्केद् हाई बंड़ासिइंग् एटेः केदा। हुड़िग् तयोम ते तारा टुपअः हकुइंग् पसेकेद् कोआ , आद् पीट रेंग् अक्रिंग् मेनतेंग् मोने केदा।

नअः दो पीट तअःइंग् तेबअः लेद् चि ठीक एन हिलिंग् पिट जपअः तअः रेगिइंग् नाम तदिंग्अः, ओड़ोओए मेताइंग् तना, चिअःकोड़ाम पहम तना, एन हुलंग् रेअः दुरंग् गोनोंग्। हे हिलि, कइंग् रिड़िंग् कदा। कोरे तम, मेनते कजि तन चि टुपअः रे इदिकन हाई कोइंग् उदुबाजा। एन तेए कजियादिंग्अः ओचोया कोड़ा लंदा लेद्मेंया दंग् अमदो सरतिगिम पतियर जना। चिनअः दुई अनाइंग् ओमाई, एन हाई कोम इदि केद् कोआ। ओड़ोए मेंतादिंग्अः मर दंगड़ा हिजुःम, ओको लेकन दुरंग्कोम अयुमा। अयुम बारी दो कअ, मेनदो अम अयर ते नेया को ओल तुसंग्एम। नअः दंग्अइंग् सरितना, गपा देरंग् ओकोएओः कअगे को उदुबा मेंया। दुलाड़ हिलिइंग्अः कजि सेकेड़ा ते सेकेड़ा पसराव जना। एन तयोम ते, काका–काकी, हगा–मिसि, ओड़ओ दादा–दादी तेको, हिजुः केद् को मेताइंग् तना। अम दो इसु बुगिनअःम कमि तना। नेआ को रेंगे–रबंग् होड़ो कोअः सनरति कजि को तनअः। अम जरूड़ ओल सोतोःएमें अले अमले उदुबा मेंया। सरिगी एन हिलिंग्अः उनुसकुर ते ने दुरंग्को ओलसोतोः मोनेया कदा। दुरंग्–गमु को इसु मेनअः। मेनदो ओकोनअः "सेनगी सुसुन, कजिगी दुरंग्" मेनेअः तेयअःको बारिइंग् ओल सोतोः जदा। चिलिका को उदुबा दिंग्अः एनका गी ओलोः तना। अपे अपेको लेका दुरंग् सोतोःए पे। नगेरा सुसुन–दुरंग् रसिका लोओः ते समाज रेअः सरनति कजि को सड़ि लोओः ते नितिरोः तना। चिमिन जकेद् नगेरा रअः सड़ि अयुमोः तना एनता जकेद् रमल ते एन दुरंग् आद् सनरति को होयो रे ओटंग्ओः तना। नगेरा सड़ि तन रे ओकोए चेंड़ें चिलिकाए अयुम जदा एनकागि मुण्डा कोअः सुसुन दुरंग् होड़ो कोअः सुरूद् रे एसेर तनए। हगा ओड़ओ मिसिको डेक बाजा सड़ि ते अपेअः इतिहास इतिहास कअपे सरि दड़िया। अपे के सनरति रे नगेरा भजन रेअः दुरंग् को रसिका मेनते कअ मेनदो मुण्डा कोअः सरनति रेअः जगर बरनिका तनअः। मुण्डा कोअः पटे तोलोंग आद् मिसि होनकोअः लहंगा अचरा रेगी मुण्डा कोअः जगर बरनिका रेअः साहित्य बनियाकना। एन नगरा भजन दुरंग् रे बुगि लेका नामोः तना।

दुलड़ते पेरेजाकन सेपेड़ेद्–हपानुम को, नगरा चि नगेरा सुसुन सिदा जोपोअर दो काइंग् अयुमकदा। मेनदो नगेरा,रब्का, डुलकी आद् दुमंग् सड़ि तन रे बेरेलाकन होड़ोमो कअ एकेला जन रे अम सरिम चि ने होड़ोमो कअ गी जअः होई बेरेलाकना। कअ रे ने होड़ोमो आदिवासी समाज रेअः राईन–गाईन आद् नेग–दस्तुर कए इतुअना। इमिन रेओ रूतु सड़ि अयुम केद् ओकोन दंगड़ीअः होड़ोमो रे दुरंग–गमु नंग् उनुसकुर कए अटकर केदा तोबे दो सरिपे चि इनिअः तअः दुकुगी दुकु पेरेजा कना। इनिःअः होड़ोमो रे बहा कअ आला कना। इनिःअः होड़ोमो रे हुरूमसुकु रसि बनोःअकना। माखु तयअः सोको जना होई। एनाते होड़ोमो तयअः रे सिकु–मंजि उरू को सरूबाकजा। बुरूगी बुरू, सोबेन लेकाते इज्–डूकि उरू रे मेनाई होई एनका टोर नमोःआ। हगा ओड़ओ मिसि को चिलिका नगेरा बई एटेःयना? चिलिका को सुसुन एटेःकेदा एना को उदुब् इसु बलए मेनअः कना। हॉ नगेरा नुतुम एटेः सिदाएतेगी होबा दड़िओःआ बुरू को नगेरा लेका बइया कना। नगेरा नुतुम दो होड़ो कोअः दिसुम रे इसु मेनअः। एना चिलिका मरे नेलेपे "नगरा चि नगेरा बुरू, नगेरा दुकु, नगरा दिरि, नगरा हातु, नगरचि, नगेरा चि नगरा लेकन टयद् तेगी होबा दड़िओः आ" तिसिंग रेअः दिकु नुतुम नगर चि शहर बइया कना। चिअः चि नगेरा बुरू लेकन टयद्एते गी राजा को अकोअः दुश्मन चि बैरी को नेल जद्को तइन केना। हे जेनअःगे होबा जन। मेनदो होड़ो, होड़, हो को तला रे नंग्को परिया सेताको दिरिंग्, कुड़ि जोआ रे गुचू, बेड़ाएतेगी नगरा चि नगेरा नुतुम मेनअः कना। एना नंग् ने नगेरा शब्द चि नुतुम होड़ो जगर रेअः असली शब्द तनअः। टोनंग्–कंदर हातु दिसुम तला रे होड़ोको एयोन मेनते ने नगेरा को सड़ि जद् तइना। आद् बैरीको हर गिड़ि तयोम खोब् रसिका तेको सुसुन तइना। ओकोनअः तयोम ते जोजो सुबा अखड़ा रे रसिका टयद् बई जना।

हगा ओड़ओ मिसिको, नगेरा रअः बारे रे कुलि लिंग् रेदो पे मियदो काइंग् उदुब् दड़िया। चिलिका हाले नगेरा को बइया मर उदुबा लेम।

मियद् बदि चि बयर काइंग उरूम दड़ि चि दब् दड़ि, मोचाते बारिंग् काकला देंगापे तना। ओकोन उहूर ते नगेरा बेस सड़िया एना को काइग् सरिया? मर सुसुन पे मेताइंग् रेओ काइंग् सुसुन सरिया नअ दोइंग् सड़ि सरिया। हड़म कोअः कजि चि ओकोन सेपेड़ेद् रब्काए सड़ि सरिया इनिःगे नगेरा रअः सोबेन अदि–गमि सरिया। अपे तला रे एना नंग् ने नगेरा दुरंग्को ओल केद् बगि तुका तना चि आबुअः होड़ो जगर समाज रे नगेरा सुसुन दुरंग् लोओः ते सनरति कजि कोए उदुब् तना। एना अपे ने दुरंग्को जरूड़ ते जरूड़ दुरंग्एपे। होड़ो जगर कअ इतुअन को नंग् एनाके हिन्दी तेंग अनुवाद कदा। चिलिका सरि जन लेकाइग् अनुवाद कदा चिअः चि मुंडाएते हिन्दी अनुवाद इसुबलए मेनअः। ओकोन दंगड़ी बाबा सड़, बाबा तिकि, रोहोड़ रूडुंग, गूगुम सरियाए इनिःगे अइंग् लेकाते मुंडाएते हिन्दी रे अनुवाद ठीक–ठीकाए रिका दड़िया। कड़बा डोकोद्–डोकोद् चि एरा मोचा रेअः नोगोद्–नोगोद् मिद्गे अटकारोःआ। ने दुरंग् को होड़ोको चिलिका को ओंमादिञा एनका गिइंग् ओल बनिया कदा। ओकोएअः किताब् ते कुम्बुडु केद् काइंग् ओल बनियाकदा। ओकोन ओकान हगा–मिसिको, होन को ओमादिञा इनकुआ नुतुम हुंडि तुसंग् जमा केन कोअः नुतुम एटेः रेगिइंग् ओल जदा। तरामरा सेड़ॉन होड़ो इसु सिरिमा सिदा कोरे नगेरा भजन दुरंग् को जमा लेदा होई। मेनदो ओकोए तेको तइन केना इनकु बेस नोः ते कइंग् सरि तना। अइंग्अः असरा मेनअः चि ने हुड़िंग् लेका नगेरा भजन दुरंग् को आबुअः समाज रेअः इसु सिरिमा कजि कोए उदुबे्या। चुन्डुलेआ,आद मुण्डा कोअः सनरति कजि ओड़ओ इतिहास कोए उदुबा बुआ। नेआ गी अइंग्अः असरा मेनअः।

ओल तन रे चिमिन लेका गलति–सलति को होबाओ तना एना को अलोपे नेल पिचाया। मेनदो अपे मोन सुरूद् ते हिजुः तन हगा–मिसि होन को चुन्डुल उदुबा कोपे। ओड़ओ मिसा अपे सोबेन को पुरअः–पुरअः दुलड़सम जोअर।

अपेअः हगा : हगा परचार **रेमिस कन्डुलना**
संत जेवियर्स कॉलेज रांची

नगड़ा नृत्य और गीत के पूर्व दो शब्द

नगरा भजन के प्रेमीजन के धागे में पिरोये हुए मेरे भाई एवम् बहनो! खोजने पर आप को नगड़ा, नगेड़ा और नगड़ी नाम या शब्द बहुत मिल जायेंगे। अखड़ा के बीच नगड़ा गीत एवं नृत्य के पूर्व किसी को अभिवादन का रिवाज नहीं है। हाँ, नृत्य करते हुए एक दूसरे को अपनी ओर खींचने का तरीका तो है ही। अखड़ा में यदि कोई प्रणाम या नमस्कार करता है तो आप समझ सकते हैं कि वह उस समाज के रीति–रिवाज या संस्कृति से अनभिज्ञ है या नव–आगंतुक है। झारखंड में बहुत पहले से ही लोकगीतों में इसकी चर्चा है। कहा जाता है कि झारखंड में ''सेनगी सुसुन कजि गी दुरंग्'' अर्थात चलना ही नृत्य और और बोलना ही गीत है। इसी कथन पर यहां की संस्कृति का निर्माण हुआ है। गांव का बच्चा–बच्चा चलते चलते गीत गाता है। चलते, दौड़ते, गाते, खुशी मनाते हुए आदिवासी समाज में कविता सुना देता है। अखड़ा में इसकी प्रत्यक्ष झलक मिलती है।

भाईयो नगड़ा कैसे बना? इसके बारे में तनिक मात्र भी मुझे ज्ञान नहीं। हाँ, संतालों का नगड़ा छोटा होता है तो वहीं मुंडा, हो, खड़िया, उरावों का मध्य और बड़े आकार का। इसके अलावे हमारे झारखंड में मध्यम आकार का नगड़ा सभी आदिवासी समाज में देखने को मिल जाएगा। प्राचीन भारत में नगड़ा का काम ज्यादातर सैनिकों को युद्ध में ललकारने के लिए बजाया जाता था। क्या मुण्डाओं ने दिकुओं से देश की रक्षा के दौरान नगड़ा बजाया था? यदि हाँ, तो इनके बीच युद्ध लायक विशाल नगाड़े का निर्माण लोगों ने क्यों नहीं किया? मुण्डाओं के संस्कृतिक त्योहार को सुरक्षित करने के लिए घांसी नायकों को बाजाने की कला क्या मुण्डाओं ने सिखाया था? हां मुण्डाओं ने घने जंगलो में प्रत्येक को जागृत करने के लिए बड़े–बड़े नगाड़ों का प्रयोग किया था। इसका प्रमाण ही कोल्हान क्षेत्र का नगरा बुरू है। हो सके इसी नगरा बुरू को देखकर नगाड़े का निर्माण मुण्डाओं ने सिखाया

होगा। जिस प्रकार से मुण्डाओं के छोटे भाई 'हो' को हम आज लरका या लड़ाका के नाम से पुकारते हैं। सही में 'हो' झारखण्ड की लड़ाकू जाति रही है। वह अपने हासा और भाष की लड़ाई में किसी के आगे झुकता नहीं। 'हो' का अर्थ ही अपने देश और माटी के लिए शहीद होना। भाईयो एवं बहनो नगड़ा भजन सिर्फ मनोरंजन नहीं, यह तो समाज के अंदर छिपे हुए ऐतिहासिक घटनाओं को मधुर बोली और आवाज के रूप में प्रकाशित करने का कड़ी है। समाज को जोड़ने का काम है। इसलिए हम नगाड़े की धुन में छोटे–बड़े सभी कोई एक लय और कतार में नृत्य करते हुए अपनी गीतों से लोगों को रिझाते है। समाज के एक दूसरे से मिलते–जुलते हैं। इससे आदिवासी समाज एक सूत्र में गूंथकर आगे जाता है। नगरा भजन और अखड़ा में आदिवासी समाज के सृजन के बीज भरे पड़े हैं। इससे बो कर युवक–युवतियां खुशी मनाते हैं। दादा–दादी, नाना–नानी समाज के प्रति खुशी प्रकट करते हैं। यही तो आदिवासी समाज का जीवित अखड़ा का दर्शन है।

हमें भरोसा है कि आप सभी इस संक्षिप्त सी नगरा भजन दुरंग् गमु संग्रह को जरूर पंसद करेंगे। मुण्डारी जगर से हिन्दी में अनुवाद करना टेढ़ीखीर है। आप मेरे अनुवादों पर ध्यान न देकर गीत की पंक्तियों पर गौर कीजिए। दो पंक्ति की मुण्डारी कविता समाज से क्या कहना चाहती है? इतिहास की कुछ घटनाएं समाज के दार्शनिक रहस्यों का पर्दा खोलती हैं। कविता के इन पंक्तियों में समाज के बहुत सारे रहस्य आप को मिल जायेंगे। हजारों साल से घने पहाड़–पर्वतों के बीच रहने वाला आदिवासी समाज गीत के माध्यम से क्या कहना चाहता है! आदिवासी समाज को जानना हो तो आदिवासी समाज में आप भले ही न जन्म लिये हों, पर आप को इनके लोकगीत में समाज की विचारधारा, दर्शनिक भाव जरूर मिल जायेंगे। आप सब को पुनः धन्यवाद, जोहार।

आपका हगा परचार : **रेमिस कन्डुलना**
संत जेवियर्स कॉलेज रांची

ने शब्द कोरे चिलिकाबु लाहसावेना

हड़ा–हुड्डु, ठड़ा–ठूड्डु, ठौ–ठौ, रागोड़–पगोड़, रोगोद्–पोगोद्, लेबेद्–तूबिद्, लेपेंग–लेपेंग, रदा–रदा, हुदु–हुदु, गुदु–गुदु, हड़म–दुड्डम, जनुम–जटा, रटा–पटा, रंगुड़–रंगुड़, रोगोड़–रोगोड़,हेसोकोद्, हुरतंग् अड़ागुन, होसोंगोर, दिरि–दिरितन, टका–टुकु, रेबेद्–कोरसोकोलद्, जलोम–कोलाद्, खटा–खुटु, खाई–खाई, हेड़ा,तबड़ी, थोपियाव, चट्ट्कन, बायला–बातुड़, एचेम–चेड़ेम, चोगड़े गई, हड़म हडा, दड़दुड़ तन, रेंयों–रेंयों, ने लेकन मुण्डा कोअः सड़ा–शब्द रे ''हेड़ेम सड़ा'' ओड़ोंग बलए गिया। मुण्डा होड़ो को टोनंग्–कंदर बुरू रे, टोनंग्–कंदर छोपा चलु तन रे सड़ा को सेसन तन लोओ होड़ोमो रसिका ओड़ोंगयना एना गी हड़म को कजि तदा। ''सेनगी सुसुन, कजिगि दुरंग्'' हे होड़ो होन को दिरि–रूगुड़ी, जनुम जटा, हुदु–हुदुतन बोरोवन गड़ा जपअः रेको कमि तइना। एना नंग् गे सेनतन–सेनतन रे आबुअः पुरखा हड़म–बुड़िया को ''सेनगी सुसुन कजिगि दुरंग् को मेने केदा। आद तिसिंग् एना गे अखड़ा बइ जना। अखड़ा होड़ो कोअः कमि–उदुम, नला–तुम्बल केद् होड़ोमो रसिकान टयद् कअ तइन केना। नेआते अकोअः जगर–बकंड़ को नितिर जद् तइन केना इसु संगिइंग् जकेद् सड़ा को दुरंग–गमु लेकाते सेनोः तन तइन केना। ओकोनअः इसिंग् मुण्डा कोअः इसु मरंग् उतर साहित्य आद् कहानी कथा बई जना। नेया गी सेनगी–सुसुन, कजिगि दुरंग्। नअः अबु आबुअः होन सिटिया, जई को तला, पुरखा हड़म को बगि तुका कदा एना को सेनगी सुसुन कजिगि दुरंग् होराते इसुकुल कॉलेज रे पड़व जरूड़ी मेनअः। सेनकेद्, दुरंग्–गमु केद्, दुकु गेरंग् केद्, इयम केद् आबुअः दिसुम पुरखा हड़मको दिसुम को बइअद् बुआ एनका गि अबु नअः जरूड़ी मेनअः। उड्डुकेद्,पहमकेद्, नेलकेद्, इतुकेद् सड़ा तबुअः के ओल मुटन रे अगु लगातिंग्आ। हगा ओड़ओः मिसिको उड्डु लेपे मियद् दुरंग्'' चि पीट पीड़ि रम्बड़ा ओते, दासी कोड़ाए चिनअः चिकाया? दहिना रेन बंडा हडा

काए सेसेना, दासी कोड़ाए चिनअः चिकाया? नवा–नवा दासिया कन कोड़ा पीट जपअः पीड़ि, सियुः तनए आद् बंडा हडा काए सेसेन तना, एन इमतंग् चिनअः एन बेरेलाकन कोड़ाके कअ चि खिंस ते कुरकुरिया? सोबेन हड़म–बुड़िया, कोड़ा–कुड़ि को नेलि तना। सियुःकाए सरि तना, सरितन रेओ सियुः हडा एटअःतेए निर जदा चि तयोम तेए चूदेन तना। एनका गी अखड़ा रे सुसुन तन कोड़ा–कुड़िको मियद् दंगड़ा चाहे दंगड़ी अयुर–तयोम कटा चूद् केरे सुसुन आद् ताल कअ बइओःआ। जीदन रे हड़म–बुड़िया रे कमि–उदम रे कअ देपेंगा रे कमि उदम कअ होबा दड़िओःआ। चेतन रे ओला कन दरुंग लेका, सिः तन कोड़ा चिनअः चिकाया? दहिना रेन बंडा हडा काए सेसेन रे। अबु होड़ो जगर तन को चिनअःबु चिकाया, जब् अबु आबुअः जगर–बकंड़, दुरंग्–गमु, कहानी–कथा, हातु दिसुम रेअः इतिहास, होनोबा, अबु आबुअः जगर ते कबु ओल सोतोःए रेदो नेआगी होबाओ चि दिकु को तिसिंग् आबुअः ओते–पीड़ि, दिसुम जगर सोबेन लेकाते उलटी–पुलटी को ओलकेद् को उदुबा बु तना। चि अपे मुनुएतेगी सितरू लेकन होड़ोको तन पे। नअः दो अपे अलेअः सभ्यता रेले इतु जद् पेआ। अपे टोनंग्–कंदर रे जनवएते गे लंगटा–बुचा खपरा चोर गी तन पे। खपरा चोर लंगटा–बुचा लेकाते अपे रे हुड़िंग् लेका सेंड़ॉओ बनोःआ। हगा–ओड़ओः मिसिको टोनंग्–कंदर रे ओकोए खपरा चोर बइएन जनए इनिःआ ओड़अः रेअः चूला को रपूद् जद् तइन केना। जे लेका खपरा बाबाई होड़ो जगर को इतुन जना एनकागी जअः होई होड़ो जगर ते सम्यता जन को नगेरा बई को एटेः लेदा। चटु–तवा बई को एटेः केदा। कुंगकल को होला–होला निकु अबु तला रेको हिजुःअकना। अबु दो सरजोम सकम रेअः पुडूः–खलगी रे, कोदे–लाद्–मंडी बु जोम तइना। होन–जाई, एंगा–सिटियाको होन अकोअः तला रे चिलका को चूदेन जना एनका गी सुसुन–दुरंग् भजन को एटेः केदा। नगेरा चिलका बई जना? एनाको चेतनरेगी हुड़िंग् लेका ओला कना। नअः होड़ो को तला रे, ओकोन होड़ोको नगेरा डुलकी,रब्का को बइ लेदा इनकुअः उनुदुब्

लेकाइंग् बनि जदा। नगेरा बई रे–खोल, बदि, कोन्डल, सुनुम–गदा, धुवन को तइना। नगेरा रअः ताल रब्का ते ओड़ोंग् तना। रब्का होरा ते दुरंग रेअः कटा चन्डग्ओः तना। एनते नगेरा बाजा होराते होड़ो को, बुदु हाई लेका, रसिका तेको सुसुन तना।

बुदु हाई को दअः रे ओंयर तन रे लगाओः तन आद् डूबुजोः तन चिउलाओ कअको नेलोः तना। एनका गे आदिवासी को सुसुन तन रे लगाओः तन कअ को अटकारोः तना। निकुअः कमि–उदम, कमि जिदनगे बुरू–चोरद्, टका–टुकु तला रे होबाओः तना। हॉ झारखण्ड रे उरॉव दिसुम रे इमिनंग् टोनंग–कंदर आद् मपारंग बुरू को बनोःअकना। एनाते निकुआ सुसुन–करम सम पीड़ि रे सेन तन लेका नेलोः तना। हे मर हगा–मिसि, सेपेड़ेद्–हपानुमको, एंगा–अपु को, ऑवगे ओल बड़ा तन रे नेकागी ओलोः तना। नेआ को अलोपे पिचाया। मेनदो मुण्डा कोअः नगेरा सुसुन होराते मिद् मोन ते सोतोःएन लेका ओकोए बम्बारूबु जुल तना? जेतएगी कअ। नगेरा सुसुन नेपेल रे इसु रसिका मेनअः मेनदो अखड़ा रे गति लेन रेदो चिमिन सा कटा पसे गिड़िओःआ एना रअः जेतन हिसाब् बनोःआ। चिअः चि अखड़ा रे सोबेन हुड़िंग–मरंग होड़ो कोअः होड़ोमो कटा सुगड़ आद् बेरेलाकनगी नेलोआ। एन लेकाते जॉए जेताएओ का को लगाओः तना। अखड़ा रे सोबेन कोअः अपन–अपन जोका लेका लेका गति–संगि को तइन तना। हड़म–बुड़िया कोअः जुदागी गति को तइना। अपन–अपन हराकन लेका गति को नेल नमोःआ। हे मर हगा–मिसि, सेपेड़ेद–हपानुम को नगेरा चिलका को बइया एना मोयोद् चोकोःए बनि लेयाइंग्। चिलिका होड़ोको उदुबा दिइंग्अः एनका गिइंग् ओल बगि तुका तना। तयोम ते अपे उदुब्केद् ओलसोतोःएपे।

नगरा आद् रब्का साईज् लेकाते बईओः तना।

पट्टी आद् बनाई –: 4–7– 9– 12.

संताली आद् हो तला –: 4–7.

मुण्डा, उरॉव, खड़िया –: 7–9–12.

बनाई नंग् सना–फना को –: मेंड़ेद् रेअः पतला पट्टी

बदि–: उहूरबदि, धुवन,पुन्डी छीट लिजअः

खाड़ी –: हेसेलदरू, कअ रे केटेज् दरू रेअः तइना, ओकोनअः ते सोरलोः कअ ओड़ोग्अः।

उहूर –: ''भैंस उहूर'' रअः तइना। बदि केडा उहूर रअः।

केडा उहूर मोट लेकाते दुदुगर कअ सड़िया।

नगरा बाबई रेअ तरीका –: नगेरा दब् मेनते भैंस उहूर के एअ चि सात दिन जकेद् जोबिला लोसोद् रे रेको तूपु तना। नरम तयोम ढिंकि सेहेल रे रूडुंग केद आउ जदा को। अगर ढिंकि बनोः रेदो बिन्दी कचरा कअ रे ओकोनअः ते कअ सोरलोःगो तन मुगरा ते रूकेद् उहूर को नरम जदा। एनका गी बदि केओ। एन तयोम चिलिका नगेरा रअः आकार मेनअः एनका हद् केद् पट्टी रेको दब् जदा। दब् सिदा धुवन के लसा लेका बई केद् पुंडी छीट लिजअः रे जलद् केद् पट्टी रेको जलद् जदा। जलद् तयोम साड़ि बहिरते ऑवका ओड़ोंग् तना। नगेरा पेंदा रे मियद् बिन्डाओ को बइ जदा। बिन्डा नगेरा के बुगि लेकाए दुबेया। पट्टी रे उहूर आद बदि गलंग जन तयोम ते नगेरा बइ पुरा जन रे लट–लठा लेकन सुनुम को नगेरा पेंदा रेअः उन्डूः तलारे मगा,चाहे कोरोजो सुनुम को दुल केद् मोयद् हपता जकेद् रमल सितुंग् रेको ओड़ोंग् अदेर तना। तला कोरे मिसा–मिसा को साड़ि बड़ा तना। टुन्डु रे नगेरा गाद् चि गदा मेनते कदल सकम ओन्डोर केद् हेन्दे तोरेज् को बइ जदा। एन तयोम कोरोजो सुनुम कअ रे मगा सुसुन रे ओन्डोराकन कदल सकम रेअः तोरोज रे सुनुम मेसा केद् रमल रमल सेंगेल रे इसिन तनाको, एना रे धुवन कअ रे सुनुम रे तकिदाकन नोलद् रेअः गदा मेसा केद् गदा को बइतना। एन तयोम गदा के नगेरा रअः तला रेको दुल केद् हुड़िंग् नोःको पनतिर जदा। नगेरा सेकेड़ तयोम साड़ि एटेजोः तना। नगेरा रअः पेंदा रे बिन्डा नंग् पुन्डी लिजअः रेअः बिन्डा को गलंग जदा। उहूर आद बदि कोरे मगा कअ रे कोरोजो सुनुम को गोसोः जदा। मगा आद् कोरोजो सुनुम ते गोसोःकद् नगेरा रअः साड़ा चि आवाज चाहे नगेरा

रअः दुदुगर साड़ि इसु संगिन जकेद् सुगड़ ते अयुमोः तना। खोब् साड़ि मेनते रीझवार कोड़ा–कुड़ि कोअः कनि सरसर रेअः मंयोम को टिपअः जदा कअ रे चुरिन हसा नगेरा रेको थोपव जदा। हॉ नगेरा सुसुन रे कोड़ा–कुड़िको कअ को रूमोः तना। हेमर नअः दो रब्का ते ताल ओड़ोंग केद् दुरंग सुसुन ऐटः पे। 'मर जोअर'।

इन शब्दों पर कैसे लचकदार बनकर नाचें

शब्दों पर लचक कर चलना ही "सेनगी सुसुन, कजिगी दुरंग" आदिवासी समाज का नृत्य होता है। शब्द गुनगुनाते हुए यदि रस और लय उत्पन्न होता तो जरूर ही आदिवासी समाज नृत्य करने लगता है। आदिवासी प्रकृति एवं पर्यावरण से जुड़ा हुआ गीत ही गायेगा। आदिवासी समाज जंगल, पहाड़, पर्वत, पशु पक्षी, जीव–जन्तु आदि देखकर ही गीत गाता हुआ आपको मिलेगा। उदाहरण के तौर पर हम इन मुंडारी शब्दों को गौर करें, जैसे– हड़ा–हुड्डु, ठड़ा–ठुड्डु, ठौ–ठौ, रगोड़–पगोड़, पोगोद्–पोगोद्, लेबेद्–तूबिद्, लेपेंग–लेपेंग्, रदा–रदा, हुदु–हुदु, गुदु–गुदु, पुदुरूसु, हड़म–दुड्डुम, जनुम–जटा, रोगोड़–रोगोड़, रंगुड़–रंगुड़, हेसोकोद्, हुरतंग अड़ागुन, जलोम–कोलद्, हूदिर, पोटअः, दिरि–दिरितन टका–टुकु, घोसो–घोसोन अड़ागुन, खटा–खुड्डु, खाई–खाई, तबड़ी, थोपियव, चटाकन, बयला–बतुड़, एचेम–चेड़ेम, चोगड़े गई, ओबोर–तबेर, चोंगोरोंद्, रेबेद्, हड़म हडा, बूढ़ी–ढ़ाड़री, ऐसे शब्दों पर मनोरंजन के लिए लय एवं रस का निकलना बड़ा कठिन है। फिर भी आदिवासी समाज इन्हीं शब्दों के बीच जन्म लेता, बढ़ता, पलता और अपने देश के माटी में समा जाता है। यही इसका दार्शनिक पहलू है। दुनिया कुछ भी बोले "जिन्दगी रे चिकन परवाह" अर्थात जीवन में क्या परवाह है। इन्हीं शब्दों पर हंसते–कूदते चलना ही बाद में अखड़ा का रूप लिया। आदिवासी समाज के पुरखों ने इसको गांव टोले में मान्यता दिया। अखड़ा आदिवासी समाज का केवल मनोरंजन का ही जगह नहीं, बल्कि यह समाज में प्रचार–प्रसार का केन्द्र बिन्दु भी है। उदाहरण के तौर पर हम इस गीत को ले लें, जैसे

बाजारटांड़ के बगल में बोया हुआ उरद टांड़ में हल चलाने वाला धांगर लड़का क्या करेगा? जब उसके दाहिने ओर हल खींचने वाला बैल यदि नहीं चलता है। उसी प्रकार यदि नवयुवक, युवतियां, बूढ़े–बुर्जूगों द्वारा बताये हुए खोद, लय के अनुसार जब नृत्य न करे तो अखड़ा का कोई मायने नहीं हो सकता। अखड़ा के गीत के माध्यम से आदिवासियों की भाषा–संस्कृति, इतिहास, कहानी एवं देशकाल के अनुसार समाज में बदलाव के पहलू को बताता है। अखड़ा आदिवासी समाज के अलिखित कथाओं के दर्पण है।

आर्यों के आगमन के पूर्व जंगल झाड़ के बीच रहने वाले असभ्य मानव के रूप में चिन्हित होने वाले लोग कौन थे? कैसे थे? क्या इन्होंने आर्यों से प्रभावित होकर नगाड़े का निर्मण किया या स्वयं इन्होंने सृजन किया। ऐसा नहीं लगता है झारखंड के आदिवासी जदुर, गेना, खेमटा, जरगा, मगे,कमरम छाउ, उरांव, हो, संताल, खड़िया, गोंड, भील, चाहे नागा लैण्ड के आदिवासियों का नृत्य को देखकर। आदिवासी समाज का नृत्य जलवायु और मौसम के अनुसार होता है। गीत का लय, खोद की आवाज एवं नृत्य द्वारा संदेश देने का तरीका प्राचीन काल से चला आ रहा है। आदिवासी अपने को आज तक बचाकर रखा है, पर भूमंडलिकरण के दौड़ में यह तरीका सिमटता जा रहा है। आदिवासी समाज में कुम्हार या लोहार बाहर से नहीं आये हैं। इनकी कला–कृति के व्यवसाय को देखकर ही लोगों ने नामकरण किया होगा। आदिवासी समाज में इसके बिना कोई भी खेती का सामान नहीं बनते थे। मुख्य करीगरि के रूप में रहने वालों ने ही आज के दिल्ली के महरौली में स्थापित कुतुबमीनार के पास स्थापित प्राचीन लोहे का स्तंभ राजा अशोक के काल में असुर मुंडाओं ने ही बनाकर भेजा था। जो आज अति प्राचीन असुर आदिवासी के रूप में जाने जाते हैं। इनकी बोली मुंडारी भाषा से मिलती जुलती है। इसी प्रकार कोरवा एवं बिरजिया

जन–जातियों की बोली भी। पर मानवशास्त्रियों ने अलग नाम देकर आग्नेय भाषा परिवार को अल्प रूप में लाने का भरसक प्रयास किया है। इसमें किसी प्रकार का कोई शक–संदेह नहीं होनी चाहिए कि असुर मुंडाओं ने ही प्रथम नगड़ा का निर्मण किया था। राजा अशोक के काल का स्तंभ बना सकते हैं, तो नगड़ा बनाने में कैसे पीछे रहे होगें? ऐसा हो ही नहीं सकता?

"सेनगी सुसुन कजिगे दुरंग्" कथन के साथ जीने वाले समाज को, तथाकथित सभ्य समाज के रूप में अपने को प्रस्तुत करने वालों ने इन्हें "लंगटा बुचा खपरा चोर" की संज्ञा दी है। जो भी हो इनकी अपनी दुनिया होती है। प्रकृति और पर्यावरण के साथ इनका जीवन–दर्शन चलता है। वन में जो भी छोटे–बड़े जीव–जन्तु होते हैं, इनके वे दोस्त होते हैं। इसीलिए वे अपने साथ वन पशुओं को भी पालतू बनाते हैं। छोटे जीव चींटी से लेकर बड़े जनवार हाथी तक इनके किलि–गोत्र के रूप में मिलते हैं। वे अपने पुरखों के रूप में आदर–सत्कार के साथ पूजते भी हैं। लेकिन सभ्य समाज का चोला पहने वाले लोग अपने देवी–देवता और साधु–मुनियों के साथ नाम इनका नाम जोड़ देते हैं, जो सर्वथा गलत है। आदिवासी समाज को किसी ने पर्यावरण की शिक्षा नहीं दी है। वे जंगलों में रहकर जलवायु परिर्वतन की कठनाईयों को देखकर ही इसकी शिक्षा ग्रहण की है। हालांकि अक्षर ज्ञान के माध्यम से इनके रहन–सहन, जीवन के कर्मकाण्ड को पाठशाला के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित किया जाना चाहिए, पर ऐसा हो नहीं पाया है।

नगाड़े के बारे में अनेक प्रकार की लोक कथाएं हैं। पर मुण्डा लोक कथाओं के आधार पर महिषासुर के वंशज असुर मुंडाओं ने ही नगाड़े का प्रथम निर्मण किया था। इसका साक्षात प्रमाण "मुंडा–असुर लोक कथा "सोसो बोंगा" महाकाव्य कथाओं में मिलती है। मुंडा जाति के मुक्तिदाता के रूप में प्रकट होने वाले "खसरा कोड़ा" ने नगाड़े के आकार का भट्ठी बनाकर असुर पहलवानों का समूल नाश किया था। "सोसो बोंगा" की रोचक घटनाओं पर आदिवासी या गैर आदिवासी

विद्वानों की नजर अब तक नहीं पड़ी है। सोसो बोंगा की कहानी अखड़ा नृत्य के बाद होता है। अब नगाड़े बनाने के तरीके को संक्षिप्त रूप में पेश करता हूं। नगड़ा का निर्माण अपनी समुदाय की रसिक मान्यता के क्षमता के अनुसार किया जाता है। इसका आकार–प्रकार भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में विविध प्रकार से बनाया जाता है।

पट्टी और बनावट के आकार : 4–7–9–12.

संताली और हो की बीच : 4–7–9.

मुंडा, खड़िया और उरांव: 7–9–12.

घांसी नगडा : 6–7–9.

घांसी आदिवासियों को सभी जगह बजाने के लिए बुलाया जाता है। अतः वे मुंडा, उरांव या खड़िया आदिवासियों के जैसे बड़े आकार का नगड़ा ढोकर नहीं ले जातें। वे अपनी सुविधा अनुसार बनाते हैं। इनके नगाड़े की आवाज सुमधुर और दमदार होती है तथा दूर–दूर तक सुनाई देती है।

नगड़ा बनाने का तरीका :– नगड़ा बनाने के लिए भैंसा और काड़ा के चमड़े को सात दिनों तक कीचड़ में गाड़कर रखा जाता है। इसके बाद ढिंकि में या तो एरन्डी के लकड़ी से चट्टान में तब तक पीटा जाता है जब तक यह मुलायम नहीं हो जाता है। इसके बाद इस पर करंज या सरगुजा के तेल को पोतकर तीन दिनों तक धूप में छोड़ दिया जाता है। फिर अखड़ा में इसे बजाने के लिए लाया जाता है। नगाड़े के ताल अैर लय को विशुद्ध रूप में परखने के लिए रबका बाजा के ताल से शुरूआत किया है। नगाड़े बनाने के लिए और भी साजो–सामान हैं। जिसका वर्णन यहां नहीं कर रहा हूं। मुंडारी भाग में इसका विवरण है। पुनः आप सबको जोहार!

नगरा भजन

1 : नोको रेको बइएतना,
{मेंड़ेंद् नगेरा हसा दुमंग्}
चिमय रेको बइएतना
{मेंड़ेंद् नगेरा मुचि दुमंग्}
राँची रेका बइए तना .....

1 : कहाँ बनता है? लोहे का नगड़ा और मिट्टी का मांदर! कहाँ किधर बनता है? लोहे का नगड़ा और मुचि मांदर! राँची में बनता है, लोहे का नगड़ा और मिट्टी का मुचि मांदर।

2 : चिमिन मई रेम डिण्डा लेना,
{सेरेंग् लेकन अखड़ाम गडा केदा}
चिमिन मई रेम बिण्डा लेदा,
{सड़मी चेतन दअः सरिड़यना।

2 : कितनी जवान तुम हो गई बेटी!
चट्टान के समान अखड़ा को तुमने गढ़ा कर दिया।
मईयाँ तुम कितनी बड़ी हो गयी,
कि छप्पर के ऊपर से पानी बह गया।

3 : बुरूचुटि रेन पियो ओड़े,
चिरगलाकन में पियो ओड़े
सदोम चवाँर तेको पसे मेंया।

3 : पहाड़ी तराई की पियो चिड़ियाँ
घोड़े के चांवर से लोग तुम्हें फंसाएँगे, सचेत रहना।

4 : {हाय चोके अमअः छायला,}
गडा गेना टुकुरेम दुबा कना,
{हाय} चोके अमअः छायला,
गडा गेना दिरि रेम दुबा कना।

4 : ओ मेंढक! तुम कितने रसिक चंचल हो,
कि नदी किनारे के चट्टान पर बैठे हो।
ओ मेंढक! तुम इतने रसिक हो,
कि नदी किनारे के पत्थर पर बैठे हो।

5 : डाउ सकम रदा–रदा,
हनारिञा ओड़अः कोते रेया?
डाउ सकम रदा–रदा।

5 : डाउ पत्ते की आवाज रगबग–रगबग!
मेरी सास का घर किधर है?
डाउ पत्ते की आवाज रगबग–रगबग।

6 : उलि सकम नियारा
गुलांइचि बहा तेको अड़ाँदिना रे,
उलि सकम नियारा।

6 : आम के पत्ते की पवित्रता,
और गुलैची के फूल से लोग शादी होते हैं।

7 : जुता बाबु जुता, जुता बड़न में,
{राँची–कलिकता रे जुता बड़न में}

7 : जूता पहनो बाबू तुम जूता पहनो,
राँची और कलकत्ता में जूता पहनकर चलो–फिरो।

8 : राँची रेन डेढ़ फुटिया,
{हील जुता तेम सलंगिजना}

8 : राँची का डेढ़ फुटवाला
हील वाले जूते से ऊंचा हो गया।

9 : इचअः जटा, तिलय जटा,
मई रे साईकिल रे लदि कुलाइंग्में।

9 : धाय और तिलय की लकड़ी को,
प्रिये साईकिल में लादकर भेज देना।

10 : सिरमा रे इपिल बिरिंग्–बिरिंग्,
ओते रे दिरिरूगुड़ी।

10 : आकाश में तारों की टिम–टिमाहट,
और धरती पर कंकड़, पत्थर।

11 : लंग्ओड़े, दादा लंग्ओड़े
{बड़ियाय जोम तना लंग् ओड़े}

11 : लम्बी पूँछ वाली लंग् पंछी, दादा!
खा रही है बरगद का फल।

12 : राजा होनअःए अड़ाँदिकेना
{सोबेन परेजाको नेओताजना}

12 : राजा अपने बेटे का विवाह किया था,
सभी प्रजाओं को न्योता दिया था।

13 : होरा रअः बड़ि लियुड़–लियुड़ बड़ि,
{बड़ि सुबा रे दुलाड़ा नुतुम तम ओले तुका में}

13 : रास्ते के किनारे का अति सुन्दर
उपर–नीचे झुकता हुआ बरगद का गाछ पर
प्रिये, नाम लिख के छोड़ देना।

14 : चकियारे चकिया दुई चकिया,
{साइकिल रेदो दुई चकिया}
चकिया रे चकिया चाईर चकिया,
गाड़ी रेदो चाईर चकिया।

14 : चक्का रे भाई चक्का,
साईकिल का दो चक्का।
और मोटर गाड़ी में चार चक्का।

15 : पनचारे जना हले पनचारे जना,
{रेल गाड़ी हले पनचारे जना}

15 : पंचर हो गया भई, पंचर हो गया
रेल गाड़ी पंचर हो गया!

16 : बायला जुता रेम जुता बड़ाना,
{बाइसी जुता रेम खुलसु बड़ाना}

16 : बेमेल जूता, जूता पहना करती हो
दिखावटी जूता, पहनकर ठोकर खाती रहती हो।

17 : खासखसा टेटेंगा बारो रंगा,
{सेरेंग् चेतन टुकु रेम, बारो रंगाना}

17 : खुरदरे गिरगिट बारह रंग वाले,
चट्टान के उपर बैठकर बारह रंग दिखाते हो।

18 : अम दोरे सुगा सोबेन बाहाम नेलाना,
आऊअः लंग् मेरे सुगा ससंग् बहा।

18 : तोता, तुम तो सभी फूल देखे हो
ला देना तोता, हमारे लिए पीला फूल।

19 : दोदाड़ी दरू जनुम बिइंग्को,
जनुम बिइंग्को हाले, जो सिबिला।

19 : कंटीले बेर का पेड़,
बेर का फल मीठा होता है।

20 : जोजो दरू रे बकाए दुबा कना,
रसिकाते होटोः रे रूमाल तोला कनाए।

20 : इमली के गाछ पर बैठा हुआ बगुला,
खुशी से गले में रूमाल लपेटा है।

21 : चिकन रटा–पटा हाले,गंगाए रटा–पटा
बुगि लेकन कुड़ि हाले पसेयाकना।

21 : क्या रट–पट की आवाज भई!
गंगई पौधों से रटपट की आवाज।
भई सुन्दर सी लड़की फंसी हुई है।

22 : सहन–सकम केनम चिरे किता बिन्डा केना,
बिन्डा दोरे मई, बुरू चुटि रेम बगितुकादा।

22 : लकड़ी–पत्ती चुनने गई थी,
कि चटाई बुनने गई थी,
नेठो तो बेटी पहाड़ के चोटी पर छोड़ आई।

23 : हातु–हातु जोजो दरू पंतियाकना,
अम चिया बिन्दीराम चंकियाकना।

23 : गांव के गांव एक कतार में इमली का पेड़,
मकड़ा तुम तो इसमें जाल बनाए हो।

24 : कोलोम लतर कुदा सुड़ा,
कलंग् रे बपगिया बारू सुड़ा।

24 : खलिहान के पीछे में जामुन और कुसुम के
नव–पल्लव एक दूसरे से अलग होना नहीं चाहते।

25 : किता दरू रेन सालु मैना,
चिरगालकनमें सालो मैना,
सदोम चवाँर तेको पसेमेंया।

25 : खजुर पेड़ का सालु मैना, सचेत रहना सालु मैना।
घोड़े के चांवर से फंसायेंगे लोग तुम्हें।

26 : दुदुगर जना सालीम, कुवांसी जना,
अबिसलोम अपुते लोःओए लड़ाई केना।

26 : आंधी और धुंध हो गया सालीम,
अबसलोम पिता के साथ लड़ाई किया था।

27 : सिकिरी रे सिकिरी सोना सिकिरी,
जुसब्अः होटो रे भेवला जना।

27 : हार भई! सोने का हार,
सोने का हार, जोसेफ के गले में लिपट गया।

28 : नेल नमानाइंग् जुलतन दिसुम,
गोनोःए गड़ा परोम रेया,
सोना–रूपा, हीरा समाड़ोम, गोनोःए...

28 : देख आया मैं चमकता देश,
कब्र–खाई के उस पार में
सोना, चांदी और हीरा, मृत्यु के उस पार ही है।

29 : का चिरे दुलाड़म पहमकिदिञा,
अइंग् बेगर कुलितेम अड़ंदिजना।
पिरिति किदिञाम दुलड़ाकिदिञाम, बगि किदिञाम।

29 : क्यों प्रिये मुझे याद नहीं आयी क्या?
मुझसे पूछे बिना तुम ने शादी कर ली।
प्रेम किया, मुहब्बत किया मुझसे,
खोज खबर लिये बिना, तुम मुझे छोड़ के चल दिए।

30 : पिन्डगी चेतन तुलसी दारू,
जोड़ा रूमाल हिराकतेमें।

30 : आंगन में तुलसी का पौधा,
प्रिये! जोड़ा रूमाल हिलाते रहना।

31 : कन्टड़ा जो जोफा–जोफा,
बुटाएते चुटि जकेद् जो लेना।

31 : कटहल फल गुच्छा–गुच्छा
जड़ से चोटी तक है फला हुआ।

32 : आठ पटि नगेरा, बारह पटि नगेरा,
नगेरा–नगेरा रे एकेला जना।

32 : आठ और बारह पट्टी का नगड़ा,
नगड़ा की आवाज से थर्रा गया।

33 : ने अमअः डेले होन, काइंग् हेबेया,
डिन्डा लार –लार काइंग् बगिया।

33 : लो, तेरा छोटा बच्चा, गोदी नहीं करूँगी,
युवा रसिक मैं नहीं छोड़ूंगी।

34 : अलंग् जगर केन उलि सुबा,
गुरजना चिरे बटिजना?

34 : हम दोनों ने बातें की थी जहां,
वह आम का पेड़,
उखड़ गया कि गिर गया?

35 : संगा नड़ि दादा, संगा नड़ि,
दिरि रेबेद् रे संगा नड़ि।

35 : कंद लता भैया, कंद लता
पत्थर के खोह में कंद लता।

36 : अले दो संगा काले रोयना,
बकड़ी टोंगकाजन, सुकरी बोलो जन,
संगाए जोम केदा।
अले दो संगा काले रोयना।

36 : हम तो शकरकंद नहीं रोपे हैं।
घेरा टूट गया, सुअर घुस गया, कंद खा गया,
हम तो कंद नहीं रोपे हैं।

37 : राँची सहर रे आलु को रोय लेदा
आलु को रोय लेदा आलु–बालु तरकारी,
बुगिन कुड़ि सरकारी,
मुसलमान कोड़ा कोलोः ए निरे जना।

37 : राँची शहर में आलू रोपा गया था
आलू रोपा गया था, आलू–बालू तरकारी
सुन्दर लड़की सरकारी,
अन्य लड़कों के साथ भाग गई।

38 : जोजो दरू चेम–चेम,
जोजो दरू चेम–चेम रे,
हनारिइंगअः मोचा चेम–चेम।

38 : इमली गाछ का फल खट्टा–मीठा,
इमली गाछ का फल–खट्टा मीठा रे भई!
मेरी सास बुढ़िया का मुँह खट्टा–मीठा।

39 : उलि सकम हरियरा,
गुलाईचि बहा तेको अड़ंदिना रे
उलि सकम हरियरा।

39 : आम की पत्ती हरी–हरी,
गुलैची फूल से लोग शादी करते हैं।
आम की पत्ती हरी–भरी।

40 : एला बोलोमें, एला बोलोमें,
पिरिति बंगेला बईयाकना।

40 : आ प्रवेश कर प्रियतम।
सुन्दर सा महल बना हुआ है।

41 : हातु–हातु दोदाड़ी, पीड़ि–पीड़ि दोदाड़ी
रोहोड़ाकन दोदाड़ी कुमबुड्डु जना।

41 : गाँव–गाँव, टांड़–टांड़ बेर का फल,
सूखा हुआ बेर का फल चोरी हो गया।

42 : बासी मंडीदो ओकोए कजि तना रे,
दोदाड़ीरेयो रे रूकुवालंग् में।

42 : बासी भात कौन मांग रहा है?
कम से कम बेर का फल दे ही सकती हो।

43 : गितिल पीड़ि सियुःकोड़ा थइला रअः,
चिनियाबादाम जोमाकते में।

43 : बलुवाही खेत में हल चलाने वाला युवक
थैला में, रखा हुआ चिनिया बादाम खाते रहना।

44 : कांसी पीड़ि रे बंड़िया कोड़ाए बालु तना,
कुड़ीको दलीपे–दलीपे, मर दलीपे!

44 : कांसी फूल के टांड़ में व्यापारी लड़का पागल हो रहा है
लड़कियाँ कह रही हैं, पीटो और पीटो।

45 : ओड़अः रेमा चिरे, पीड़ि रेमा माई रे,
कुलीमेंरेयो कामें काकालाया।

45 : घर में हो चाहे खेत–टांड़ में,
पूछता हूँ, फिर भी बोलती क्यों नहीं?

46 : गड़ा–गड़ाते लोवा बिलितना,
टुंकी हिलि किरिंग्अइंग्में, जो 'जोम रेदो।

46 : नदी किनारे किनारे गूलर का फल पका हुआ है,
गूलर का फल खाना है भाभी, तो टुंकी खरीद देना।

47 : बरियागे टुंकी नगेन बंड़ियाँ कोड़ाए रगे तना
बंगुइयारे, तुरीबुडी गोजे जना।

47 : दो टुंकी के लिए बनियाँ लड़का रो रहा है,
टुंकी बनाने वाला तूरी मर गया क्या?

48 : हाय चोके अमअः छायला,
गडा गेना टुकुरेम दुबाकना,
हाय चोके अमअः छायला!

48 : ओह! मेंढक! तुम्हारी रसिकता,
नदी के किनारे के चट्टान पे बैठे हुए हो,
ओह! मेंढक! तुम्हारी रसिकता।

49 : हातु–तला लोयोंग् दोहोर,
जोड़ा सेरालिकिन, अपिर तना।

49 : गाँव के गढ़ा दोन के बीच में,
दो सेराली चिड़ियाँ उड़ रही हैं।

50 : बुरू–बेड़ा बाबा तलंग् ओकोए कुड़ि, होरोवालंग्अः
ओकोए होरोलंग्, होरोवालंग्अः।

50 : पहाड़ी तलहटी के पास का धान,
लड़की कौन हमारे लिए रखवाली कर देगा?

51 : रचा जोःओ' जोनोःओ मुठी रे मुठी रे,
राली घुघुरा लोदोबेकेना!

51 : घर आंगन बुहारने वाली झाड़ू के मूठ में,
छोटी घूंघरू अति सुन्दर लगती है।

52 : कंपानिया रेजा–कुलिको,
पहिया रेको निरे सेनेया रे, बोरोवन गी!

52 : कंपनी के रेजा–कुली, रेल के पहिये में
दौड़कर काम करते हैं, डर लगता है देखकर।

53 : केरा दरू, दरू लेना, मिसागे जो लेना,
ओह रे! समय सेनोः जना, नसावे जना।

53 : केला का पेड़ पर एक ही बार फल हुआ था,
ओह रे! समय बीत गया।

54 : मंड़ी मंड़ी ते रिमिल रकाबेया रे,
मंड़ी मंड़ी ते दअःए गमाया रे!

54 : धीरे–धीरे आकाश में बादल चढ़ आता है,
और धीरे–धीरे पानी बरसता है।

55 : सिंगारेम, सिंगारेम, अमअः दुनियाँ!!
सिंगि अमअः दुनियाँ!

55 : श्रृंगार करो, श्रृंगार करो
सूरज दुनियाँ तुम्हारी श्रृंगार करो।

56 : बियुर तना दिसुम! दिसुम! बियुर तना रे!!
जनता दिरि लेका बियुर तना रे!!

56 : घूम रहा है देश, घूम रहा है,
जांता के जैसे घूम रहा है देश।

57 : अइंग्दो उमाँना! कइंग् अड़ाँदिना रे,
दिसुम रअः सुकु रसिकाइंग् दड़ाँबड़ाया।

57 : मैं तो माँ! शादी–विवाह नहीं करूँगा,
जगत की खुशियों को खोजता–फिरता रहूँगा।

58 : सरजोम रेन लुमंग्, लुमंग् रेन पम्पालद्,
सोना दीया लेकाए जुलेतना!!

58 : सखुआ का रेशम, रेशम से तितली,
सोने की दीये जैसी जल रही है।

59 : साउड़ी पीड़ि लो तना, दादाया!!
चांची ओड़ेको ओकोतअः रेको गितिजा!!

59 : घासीला टांड़ जल रहा है भईया!
छोटी चांची चिड़ियाँ कहाँ सोयेंगी?

60 : गड़ा गेना रे, कअःसोम को हेरे लेदा,
बुडीसिम अतिंग्अय सेनकेना,
तुयुदो, लुयूःदे लुयूदेःए लोडो किजा!!

60 : नदी तट कपास का पौधा बोये थे।
चूजों के साथ बूढ़ी मुरगी चरने गई थी इधर–उधर
देखते ही सियार झपटना चाहा पर फूर्र हो गई।

61 : नाइम नगर हटिया रे, रअः तनाको, इयाम तनाको।
नाइम नगर हटिया रे, रूतु–बनम तेको सुसुना रे।

61 : नाइम नगर रूपी हटिया शहर में लोग रोते और
बिलखते हैं, साथ ही साथ बांसुरी और वीणा के साथ
गीत गाकर नृत्य करते हैं।

62 : गड़ा मरंग्अ, गड़ा चकारा,
सेरेंग् चेतानएते दादाए बंड़ासी तना।

62 : नदी गहरा और विशाल है, चट्टान के ऊपर बड़े
भईया बंसी से मछली फंसा रहे हैं।

63 : सेरेंग् चेतन रे पुंडी बंगेला,
बंगला चेतन रे, पुंडी दुदुमुल!!

63 : चट्टान के उपर सफेद बंगला,
बंगला के अंदर सफेद कबूतर।

64 : जय आदिवासी! जय झारखंड!!
झारखंडे! कले बागिया आदिवासी!!

64 : जय आदिवासी, जय झारखंड
झारखंड नहीं छोड़ेगे हम।

65 : पबिता दरू पियड़–पोयोड़ा!
जो तेना, सकमते, दलोबाकना!

65 : पपिता का पेड़ अति सुन्दर है!
पत्तियों के ऊपर फल लगा हुआ है।

66 : झोरा भाई कोतअः तिया?
डोंगा चेतन पड़िया लिजअः आतू तना।

66 : नाविक भाई! कहाँ गया?
नाव के ऊपर से पड़िया कपड़ा बह रहा है।

67 : चिमिन मई रेम डिन्डा लेना,
आएना रेम लेल, लेलाम नकिजेना।

67 : कितनी खुबसूरती पायी हो लड़की
दर्पण में देख–देखकर बाल संवारती हो।

68 : गड़ा रेमा तिरियो, बेड़ा रेमा तिरियो,
हात्नअःदअः, कदल कन्धी,
हेसेल कम्भा, रेमा तिरियाो, कम नेलोःआ।

68 : नदी के किनारे हो या पहाड़ी की तराईयों पर आसन पेड़ का पानी और केले का कांधी फल के बीच ढाँवठा के खंभे में हो प्रियतम, दिखाई नहीं देते हो।

69 : पिन्डगी चेतन तुलसी दरू,
जोड़ा रूमाल हिरा कतेमें।

69 : घर के अंगन में तुलसी का पौधा
जोड़ा रूमाल से हवा देते रहना।

70 : कले बगिया, कले बगिया,
लोटारअः दअःते अड़ाँदियाकन,
नियाराकन कुड़िके कले बगिया।

70 : नहीं छोड़ेंगे, नहीं छोड़ेंगे,
लोटा पानी से पवित्र कर शादी किया हुआ,
युवती को नहीं छोड़ेंगे।

71 : सिदा जुड़ी लेका, तयोम जुड़ी बंग्इया,
उमाँना! पहामलेरे दो, रअःगी सनाइञ।

71 : पहले वाली प्रियतम के बाद दूसरी प्रियतम के बारे में,
सोचने से बहुत अफसोस लगता है माँ!

72 : सिदा दादा नंगको परिया रे
तरौड़ी ते माँयोम जोरो जना!

72 : भईया पहले के युग में,
तलवार से खून गिरता था।

73 : अमदो गो ओकोन कुड़ि, लुन्डु–लुन्डुम नेललिअःआ
अमदो गो, ओकोन कुड़ि, साए–साएतेम हेता ञ तन।

73 : तुम तो भाई सुंदर सी लड़की को आंखें फाड़कर
देखते हो, तुम तो भाई सुंदर लड़की को
मुड़–मुड़कर देखते हो।

74 : सिरिमा रेदो इपिल बिरिंग् बिरिंग्
ओते रेदो दिरि–रूगुड़ी।

74 : आकाश में टिमटिमाते तारे,
और धरती पर कंकड़ पत्थल।

75 : सिरिमा रेदो चन्डुः–दीया मरसल,
ओते रेदो, इपिड़–पियुंग् अरसल!!

75 : आकाश में चांदनी का प्रकाश
और धरती पर टिमटिमाता प्रकाश।

76 : चिमिन चिमिन बोलेःए हो रिंगा लेदा!
लोसोद् बितर चोको दोरे, दअःए दोआ कदा।

76 : कितने समय तक अकाल पड़ा था,
और कीचड़ के अंदर मेंढक पानी जमा किया था।

77 : चिमिन चिमिन बोलेःए नयल लेदा,
बुरू बितर लेन्डद् दोरे, सिमानाए मुका तना।

77 : कितने समय तक हल चलाया था
पहाड़ के अंदर ही अंदर सीमा नाप चुका जोंक।

78 : हिन्दुसथानअः लुर चिरे, पकिस्तानअः अकिल,
सिरिमाते सेनोः तना, रॉकेट गाड़ी।

78 : हिन्दुस्तान का तरीका या पकिस्तान का दिमाग
आकाश के ऊपर से रॉकेट चल रहा है।

79 : हिन्दुसथानअः बुद्धि चिरे, पकिस्तानअः सेंड़ाँ
रेलते सेनोः तना, पंसिजार गाड़ी।

79 : हिन्दुस्तान की बुद्धि या पकिस्तान की चालाकी
पटरी के ऊपर, ऊपर चल रही है पैसेंजर गाड़ी।

80 : रेल गाड़ी गिदि–गिदि मेंड़ेद् रेगी सेसेना रे,
मेंड़ेद् रेगी सेसेना रे।

80 : रेलगाड़ी छुक–छुक करती
चलती है लोहे की पटरी पर।

81 : हवाई जहाज हुदु–हुदु होयो रेगी
सेसेना रे, होयो रेगी सेसेना।

81 : हवाई जहाज हुद–हुद करता,
आकाश में उड़ता है रे, आकाश में उड़ता है।

82 : तिरिल तुकुचिरे, तिलासरी बाबा,
रूडुंग्–रूडुंग् तेगीम तिकिने केदा।

82 : क्योंद का ओखल में सामठ से तिलसारी धान को
कूटते–छाँटते दोपहर कर दी लड़की!

83 : निरे केदम चिरे, सेने केदम,
होरा रअः धुड़ी सोबेन ओटंग् जना।

83 : दौड़ के आया था या चल के आया
रास्ते का धूल उड़ा के आया था।

84 : लोवा जरोम तना चिरे, बड़े गदर तना
चेंड़ें चेतन चेंड़ेंको अड़ागुन तना।

84 : गूलर और बरगद का फल पका हुआ है
चिड़ियाँ, खाने को उतर रही हैं।

85 : सिरिमारे इपिल बिरिंग्–बिरिंग्, ओते रे दिया मरसल
दिया मरसल नेल–नेलते मईना! लुझूर लेकम सुसुना।

85 : आकाश में टिमटिमाते तारे,
और धरती पर दीये का प्रकाश के बीच
कमर हिला हिलाकर नाचती हो बेटी।

86 : बड़ि दरू रे, तूहुड़ तुकाया!
ऐ गोई! लंग् होटोरिया!

86 : बरगद के पेड़ में गिलहरी घर बनाती है।
ऐ, गोईया! चलो हम उससे, हूड़ें।

87 : कनटड़ा चुटि रे मैना, ढेचुवा बोले रे सोभा!
ढेचुवा बोले रे सोभा।

87 : कटहल के पेड़ की चोटी पर बैठा मैना की बोली,
और ढेचुवा की सु–मधुर आवाज से
विवाह–मंडप को अति सुन्दर बना देता है।

88 : नीम दरू लिदि–लिदि, उम्बुल दोरे रेयड़ गिया रे
उम्बुल दोरे रेयड़गिया।

88 : नीम का झबरीला और छायादार पेड़
बहुत ठंढा और अच्छा लगता है।

89 : जोजो सकम रिसि–पिसि, उम्बुल दोरे रेयड़ गिया रे
उम्बुलदोरे रेयड़ गिया।

89 : इमली का वृक्ष बहुत झबरीला,
छाया बहुत सुहावना और अतिसुन्दर है।

90 : रसिका कुड़ि मंडि–उतु तना,
हाय जीयु तयअः दो! हिजुः सेनोः तना।

90 : रसिक युवती भात–तियन पका रही है
पर ओह! उसका मन इधर–उधर भटक रहा है।

91 : उरिज्–मेरोम मिन्डी को अतिंग् बड़ा तना रे
कुला–मिन्डी तुयुको लोडो को बड़ा तना रे।

91 : गाय, भेड़–बकरी चर रही हैं
बाघ–भालू–सियार झपटने को तैयार।

92 : जा रेपे एगेरिंग्, जेता रेपे' एगेरिंग्,
अखेड़ा रे, अलोपे एगेरिंग् गतिंग् मेनाइया।
हाय उमाँना! चिनअःम चिकाकिदिंग्अः?
कुड़म रेदो रे मेंद्दअः दो जो'रो तना।

92 : जहां कहीं भी गाली दो पर अखड़ा में नहीं
क्योंकि वहां मेरी प्रिये होती है।
ओह माँ! तुमने ये क्या कर दिया,
आंखों से आँसू छाती पर गिरता है।

93 : हाय दुनियाँ, अकाल दुनियाँ,
राजा घरे गोदाली कूटाए।

93 : ओह! दुनिया आकालग्रस्त दुनिया
राजा के घर में गोन्दली कूटा जाता है।

94 : लोदोबे लोदोबेरे सराजोम बा।

94 : छायादार सुन्दर सखुआ का फूल है।

95 : मगा बहा लेका समय सेनोः तना रे
मनि बहा लेका समय रूअड़ा रे,
मगा बहा लेका समय सेनोः तना।

95 : सुरगुजा के फूल के जैसा समय चला जा रहा है,
सरसों के फूल के जैसा समय लौटता है,
और समय लौटने वाला है नहीं।

96 : अइंग्अः दुलाड़ दो ईसुकुल तना रे
मनि बहा लेकाए नेलोः तना रे।

96 : मेरी प्रियतम तो स्कूल जा रही है,
और सरसों के फूल जैसे दिखाई देती है।

97 : दुलड़ा–दुलाड़म मेनेया
दुलड़ा ओकोरेम नमियाँ।

97 : प्यार–प्यार कहते हो,
और प्रिय प्यार कहाँ पाओगे?

98 : रसिका रासिकाम मेनेया,
रसिका ओकोरेम नमेंया।

98 : रसिक–रसिक कहते हो,
रसिक कहाँ पाओगे?

99 : निरे केदम चिरे सेने केदम,
होरा रअः धुड़ि सोबेन ओटंग् जना।

99 : चलके या दौड़कर आया,
रास्ते की धूल उड़ गई।

100 : अमदो मई रेम अड़ाँदिजना,
तयोम दसा चिनअः होबाओःआ?

100 : बेटी तुम्हारी तो शादी हो गई,
इसके बाद दशा तुम्हारी क्या होगी पता नहीं?

101 : दिरि ओड़अः पका ओड़अः
अइंग्दो गोइंग् तेकोलोओ मिसा तेंग् बोलोःआ।

101 : पत्थल या पक्का घर,
मैं अपने प्रिये दोस्तों के साथ ही प्रवेश करूँगा।

102 : हने गोई दोदाड़ी जो,
चौदाह अना किलो!

102 : ओ सहेली देखो बेर का फल!
चौदह आना किलो है।

103 : काइंग् बगे मेंया दुलाड़ काइंग् बगे मेंया,
रूतु–बानम तेंग् असुल मेंया।

103 : प्रिये तुम्हें नहीं छोड़ूँगा,
बाँसुरी–वीणा बजाकर मैं तुम्हें पालूँगा।

104 : अबुसालेम अबु तेलोओःए लड़ाई केना
दुदुगार जना येरूसालेम! दुदुगार जना येरूसालेम!

104 : अबुसालेम अपने पिता के साथ लड़ाई किया था,
उस समय येरूसालेम में धुन्ध भर गया था।

105 : गड़ा–गेना–गेनाते, मुसा कोड़ाए बिनती तना
गड़ादअःदो अजेंद् जना, ओते सोबेन रोहोड़ जना,
धुड़ि सोबेन ओटंग् जना।

105 : नदी के किनारे, किनारे मुसा लड़का दुआ करता है
नदी किनारे का खेत टांड़ सुख गया।

106 : रूमाल कोदो गोई ओकोए नेल तना,
दोदाड़ी रेयो रूकुअलंग्में, दोदाड़ी रेयो रूकुअलंग् में।

106 : रूमाल कौन देखता है प्रिये?
बेर का फल तो तोड़ कर देना।

107 : रूमालको रेयो रे, रूमालको रेयो रे,
बाई ए' कुलांग् में।

107 : फूल वाला रूमाल प्रिये!
बनाकर जरूर भेजना।

108 : रूमाल बहाम सरिया, बहा बइयाम सरिया,
दुलाड़ रे! किलि बइयो रेदो, लंग् अड़ाँदिना।

108 : फूल वाला रूमाल बनाने जानती हो प्रिये,
भिन्न गोत्र होने पर शादी करेंगे हम दोनों।

109 : ओकोएअः मिन्डी मेरोम, गुदु–गुदु हाले गुदु–गुदु
धरमते तोलाकन सोटा टेन्डेराकना।

109 : किनका भेड़–बकरी झुण्ड के झुण्ड रे भाई,
धरम से बंधा हुआ डन्डा रखा हुआ है।

110 : दिरि लेयंग्ओःआ, किता पतेड़ा गसारोःआ
महाविचार हुलंग् रे, दिरि लेयंग्ओःआ!

110 : चट्टान पिघलेगा, खजूर का पत्ता गिरेगा,
महाकाल न्याय के दिन, चट्टान पिघलेगा ही!

111 : नेलनमानाइंग् जुलतन दिसुम,
गोनोःए गड़ा परोम रेया।

111 : देख पाया मैं, जलता हुआ देश,
मृत्यु खाई के उस पार!

112 : हरा लेनम मई रे, दड़ि लेनम,
पन्डु सकम लेकाम ओटंग् जना।

112 : जवा हो गई बेटी, किशोरी भी पाई,
पर तुम पडुवाल पत्ते के जैसे उड़ गई।

113 : बुरू दिसुम, बुरू दिसुम
बुरू दिसुम दिरि रूगुड़ी।

113 : पहाड़ी देश, पहाड़ी–देश
पहाड़ी–देश, पत्थर–कंकड़।

114 : चन्डःदोए मुलु लेना हो दादा!
रसिकादो सेटेर लेना,
दादा! रसिका दो सेटेर लेना।

114 : पूर्णिमा हो आया है भईया!
खुशीयाली भी पहुँच चुका है,
दादा! खुशीयाली पहुँच चुका है।

115 : दिसुम रअः लंदा–रसिका,
तिरिल सकम रे दलोबाकना।

115 : देश–दुनियाँ का हंसी–खुशी,
केन्दु के पत्ते से ढका हुआ है।

116 : अले पड़ रेदो जिलाबीको रस रे!
अपे पड़ रेदो तिरिल खास–खसा!

116 : हमारे तरफ तो जिलेबी का रस है प्रिये,
तुम्हारी ओर केन्दु रस का तीखापन।

117 : कोलोम लतर कुदा सुड़ा,
कलंग्रे बपागिया बारू सुड़ा।

117 : खलिहान के पीछे, जामुन पेड़ का फूँगी एक दूसरे से
अलग नहीं होगें, कुसुम का कोमल कोपल!

118 : अलंग् जगरकेन दरू सुबा,
गुरजना चिरे बटि जना।

118 : हम दोनों जहां वार्तालाप किये थे,
वह पेड़ गिर गया की, उखड़ गया!!

119 : जोजो सकम रिसि–पिसि,
उम्बुलदोरे रेयड़ गिया।

119 : इमली की पत्तियाँ सुन्दर धारीदार
छाया इसका अति सुन्दर और सुहावना।

120 : गड़ा गेना रअः सिबिलि उलि,
हुदुमा हुदुमाते, सिंगि दोरे डूबुजेजना।

120 : नदी तट के मीठा आम का फल!
पत्थल से मारते–मारते शाम हो गयी।

121 : ओड़अः बितर मेनअः मेया चिरे,
कुलिमेरेयो कम जगरा, कुलिमेरेयो कम काकाला।

121 : घर के अंदर हो या बाहर प्रिये
आवाज देने पर भी कुछ नहीं बोलती।

122 : जोड़ा–जोड़ा नगेरा, सनाडी अयुम लेरेदो,
जीउ तइंग्दो सेनोःगे सनांञा।

122 : जोड़े नगाड़े की आवाज सुनकर
मन मेरा जाने को करता है।

123 : किता दरू रेन सालु मैना,
चिरगालकनमें सालु मैना,
सदोम चाँवरतेको पसे मेंया।

123 : खजूर पेड़ का सालु मैना!
तुम अति सर्तक रहना,
घोड़े के चाँवर से लोग तुम्हें फंसायेंगे।

124 : जोका नालंग् मेनते, जुड़ी नालंग् मेनते,
बडाए कुड़ि रूमालए एमादिञा।

124 : हम दोनों एक साथ रहेंगे,
अतः लोहरा युवती रूमाल बनाकर दी।

125 : हाय मनोवा कचिम बोरोया,
बर हिसि, निदा–सिंगि दअःए गमाया।

125 : ओह मानव तुम्हें डर–भय नहीं लगता क्या?
चालीस दिन–रात आग पानी बरसेगा!

126 : मंड़ि–मंड़ि ते रिमिल रकाबेया रे,
मंड़ि–मंड़ि ते दअःए गमाया रे।

126 : धीरे–धीरे आकाश में बादल चढ़ आयेगा
और धीरे–धीरे पानी बरसेगा।

127 : अयुर रे सुसुन तन रसिका कुड़ि,
दुरंग् तेलाकेते, अयुरते कटाए हुजुलेया।

127 : आगे नृत्य करने वाली रसिक युवती
गीत का उत्तर देकर अपनी कदम आगे बढ़ाती है।

128 : कांसी पीड़ि लो तना हो, दादा!
चाँची चेंड़ें को कोतअः रेको गितिजा? हो दादा!

128 : कांसी का टांड़ जल रहा है दादा!
चाँची चिड़ियाँ कहाँ सोयेंगी?

129 : हायरे करंज फूल! हायरे करंज फूल!
धरती में गिर गेलाएँ रे, लावा के समान!

129 : ओह रे! करंज का फूल!
धरती पर लावा के जैसे गिरकर फैला हुआ है।

130 : ऐ गोई! देईख ले तोरा चलन के,
सारू साग में हरदी लगा ले!

130 : ऐ सहेली स्वयं देख ले अपनी चाल–चलन,
सारू कंद के साग में हल्दी लगाकर पकाती हो।

131 : ने कुड़िअः नेवान दो!
मुनगा अड़अः रे, ससंग अए हेरे केदा!

131 : इस लड़की का काम–काज तो अजीब्!
मुनगा के पत्ती में हल्दी लगाकर सब्जी पकाती है।

132 : हने गोई! होर –होरी,
असम–सोल ते सेनोः तना।

132 : ओह दोस्त वो देखो रॉकेट धूँ–धूँ कर
असम–सोल की ओर उड़ा जा रहा है।

133 : राँची–हटिया रे, पहियाको बिदा कदा,
रेलगाड़ी पहिया रे निरे सेनेया।

133 : राँची हटिया में लोहे का पहिया बिछा हुआ है
रेल गाड़ियाँ इसमें दौड़ती है।

134 : डेम नदी दादा, डेम नदी,
डेम नदी दादा, जोड़ा रे लौका चलाए।

134 : डेम नदी भैया, डेम नदी,
डेम नदी में जोड़ा नाव चलता है।

135 : बड़ी दरू रे खोया हनुमान,
हिलिञ मरियमअः छीटसाड़ी के बोन्डोलाकदा!

135 : बरगद् पेड़ में खोया हनुमान, मरियम भाभी का सिल्क
साड़ी को पहनकर, झालदार पूँछ बनाया है।

136 : कनटड़ा को जोथा–जोथा,
बुटाएते चुटि जकेद् जो लेना।

136 : कटहल फल, गुच्छा पे गुच्छा,
जड़ से चोटी तक, फल लगा हुआ है।

137 : सिञअड़अः लोदोब् लेका,
कुड़ि होनको खोंयचा को बइलेदा।

137 : कचनार का पत्ता फूल अति सुन्दर, छोटी बच्चियाँ
आंचल पे खोंयचा बनाकर, जमा करती हैं।

138 : गोंगोरा नड़ि रे, गोंगोरा नड़ि रे,
परचारअः हड़म सेताए पसेया कना रे।

138 : नेनुवा लता ओह! नेनुवा लता में,
प्रचारक का बूढ़ा कुत्ता फंस गया है रे भाई!

139 : पिटपिड़ि रम्बड़ा ओते दासी कोड़ाए सी तना,
दहिना रेन बंडा हडा कए सेसेना,
दासी कोड़ा चिनअःए चिकाया?

139 : बाजार टंड़ उरद् खेत में, धांगर लड़का क्या करेगा?
दाहिने ओर का बंडा बैल हल खींचता नहीं,
तो लड़का करेगा क्या ही?

140 : बर पके, पिपाईर पके कौआ–मैना भरी गेलाएँ
कहे रे! कहे मैना! कौआ से भेलाएँ झागरा!!

140 : बरगद, पकर का फल पक गया है, खाने के लिए
कौवे–मैना भर आये। ओह! काहे रे, कौआ भाई!
मैना से झगड़ते हो!

141 : गड़ा रेमा फनिगा, बेड़ा रेमा फनिगा,
फनिगा कटा तेचि मोचातेम रेंयो–रेंयोया।

141 : नदी में हो या तलहटी में हो टिन्डे,
पैर से या मुँह से आवाज निकालते हो।

142 : सिदा सिमको रनअः रे कुआँटेन्डा सडिया,
मई रे नमिन निदा रे थाड़िम गसारा।

142 : मुरगे के पहली बाँग में कुएँ का डांग आवाज करता है,
इतनी सुबह में बेटी क्या तुम बर्तन धोती हो?

143 : चराईया अकासमें उड़ेला,
खिजुर केर डाईर में रे ढिलुवा झुकाए।

143 : चिड़ियाँ आकाश में उड़ती है,
और झूला झूलती है खजुर के डाल में।

144 : सिदा जुड़ी दो गोलभटा लेका रे,
तयोम जुड़ी दो जनुम टाको लेका रे।

144 : पहले वाली प्रिये तो गोल बिलाईती के समान
और बाद वाली कंटीले बैंगन की तरह।

145 : नदियाकर पानी उछेला–कुदेला रे, घूमरेला पिरिति ना
जाबे नदी पार, पिरिति ना जाबे नदियाको पार।

145 : नदी का पानी उछलता–कूदता और घूमड़ता है
अतः प्रिये तुम नदी के उस पार मत जाना।

146 : नगेरा गेना–गेनाते, मई रे इचअः लेकम टेबेना।

146 : नगड़ा के किनारे किनारे,
बेटी तुम, चिंगड़ी मछली की तरह उछलती हो।

147 : साईलो रे रूमाल रेदो,
साईलो रे रूमाल रेदो रे, पिरिति ओलाकना।

147 : ओह प्रिये! इतनी सुन्दर रूमाल में,
केवल प्यार शब्द ही लिखा हुआ है।

148 : पविता दरू पियड़--पोयोड़,
जो'तेना सकमते दलोबाकना!

148 : पपिता का पेड़ सुन्दर और चिकनाहट
फल से पत्ता ढका हुआ है।

149 : गोंगोरा रे फूलाई छातेना, सिम्बी फूल रिमि–झिमी,
दे'तो भौजी सिम्बी तियन, बड़ी मजा लगेला दे'तियन।

149 : नेनुवा लता के उपर रंग–बिरंगी सेम्बी का फूल लदा
हुआ है। भाभी सेम्बी सब्जी का तियन इतना स्वाद
लगता की और देना।

150 : रब्का दो सड़ि तना रदा–रदा
चिअःमई करूणा कम सुसुना,?
जोजो बुटा जोड़ा नगेरा,
चिअः मई करूण कम सुसुना?

150 : इमली अखड़ा के पास का जोड़ा नगड़ा,
रब्का की तड़ तड़ आवाज सुनकर भी,
करूणा बेटी क्यों नहीं नाचती हो?

151 : खेलाते कूदाते गरमाए गेंलो
ऐ गोईया! तोरे रूमाल में, हवा लगेला रे,
ऐ गोईया! तोरे रूमाल में हवा लगेला।

151 : नाचते, कूदते, खेलते मैं इतना गरमाया,
कि गोईया तेरे ही रूमाल से हवा लगती है।

152 : हाय पिरिति चिनअःम चिका किदिञा
सराजोम बहा लेकम ओटंग् जना।
मिसा तेलंग् दड़ि लेना, मिसा तेलंग् हरा लेना
सराजोम बहा लेकम ओटंग् जना।

152 : ओह! प्रिये हम दोनों एक साथ पले–बढ़े थे,
पर तुमने मुझे क्या कर दिया,
कि मैं सखुआ के फूल के समान उड़ गई।

153 : राँची सहर रे बेईर गाछे चगोना, ओह रे!
राँची सहर झिलमिलाएला, ओह रे!
राँची सहर झका मकाएला।

153 : राँची शहर के बेर पेड़ पर चढ़ता हूँ,
झकमक झिलमिल ही दिखाई देता है मुझे।

154 : खिड़की में रखालों मई गेंदा फूल,
हायरे सोना केरा गेंदा फूल,
हायरे रूपे केरा गेंदा फूल,
चाईरो कोना में डाईर पसाराय।

154 : खिड़की पर रखा गेंदा फूल ओह बेटी!
चारों ओर सोना और रूपा के जैसे फैल गया।

155 : केरकेट्टा डाडु ओड़े,
लियुड़ लियुड़ कोतोरेम दुबा कना।

155 : बड़ा सिर वाला केरकेट्टा पंछी,
उपर–नीचे हिलता–डूलता
सुन्दर डाल पे बैठा हुआ है।

156 : झमडा लतर झाबु,
झाबु मई रे सम्बाड़ाए में।

156 : मंडप के नीचे ऐ लड़की!
तुम अपना फूलदार झाबु संवार कर रखना।

157 : गडा गेना रेन दिरि कटाकोम,
बोः रेदो उब् बनोःआ कटा राप–रपा।

157 : नदी तट का चट्टानी केंकड़ा सिर पर बाल है भी
नहीं, पैर तेरा बड़ा नुकीला।

158 : तिरिल तरोब्को जरोमाकन रेदो
दादा मिसा रेयो रे दंगसीअलंगमें।

158 : केन्दु–चार पक कर तैयार हो तो भाईया, भाईया!
एक बार तो कम से कम, हिलाकर गिरा देना।

159 : तिरलको तरोब्को,
बुरू रे, बुरू रे जरोमामकना।

159 : केन्दु–चार, जंगल में
पक कर तैयार हो गया है।

160 : डोलाको बारूको,
दरू रे, दरू रे जरोमाकना।

160 : महुआ और कुसुम का फल
पेड़ में पक कर तैयार है।

161 : चिलिका गोईयम लंदाया,
चिलिका गोईयम लंदाया रे,
बाबा साड़ तावा लेका!

161 : कैसे हंसते हो मेरे गोई
धान बरकाने वाला काला तावा के जैसे।

162 : ने लिन्डुंग् लेन्डद् मंडि काए जोजोमा
इज् तयअःते दिसुम बाबाइया।

162 : यह जोंक खाना खाता नहीं,
अपनी पैखाना से धरती बनाता है।

163 : राँची सहर रे दअःए गमाया,
मनि बहा रंग रूवाड़ा।

163 : राँची शहर में पानी बरसता है,
तब सरसों फूल का रंग वापस हो जाता है।

164 : राँची रेन हेन्दे कुड़ी
रंग बदालाए हिजुःकना।

164 : राँची की काली लड़की
रंग बदलने चली आयी है।

165 : ओकोए तेकोः पिड़ि रे, मनि दोरे, मगा दोरे हेराकना
मनि दोरे , मगा दोरे , लोदोबे –लोदोबेकेना।

165 : किसके टांड़ में सरसों और सुरगुजा बोया हुआ,
सरसों और सुरगुजा बहुत ही सुन्दर है।

166 : किता पिड़ि रे संगाको रोये लेदा,
तुलुई–लुसुई खाई–खाई संगाए बडा तना।

166 : खिजूर टांड़ में सकरकंद रोपे थे,
चालाक लोम्बड़ी पैर से कंद खोद रही थी।

167 : रचा रे सुकुनड़ि, नड़ियाकना,
अलो रे सुकुनड़िम कोटोंग्ञा।
होरा रे बंदुनड़ि, नड़ियाकना,
अलोरे बंदुनड़िम कोटोंग्ञा।

167 : अंगन में लौकी लता हुआ है,
लौकी का लता मुझे मत रोकना।
रास्ते में बंदु का लता हुआ है,
बंदु लता मुझे मत रोकना।

168 : अमलेका दुलाड़ा जेता रे बंग्कोवा रे,
अलो रे दुलाड़म दोया बगिञा रे।
अमलेका पीरिति जेता रे बंग्कोवा रे,
अलो रे दुलाड़म हेताबगिञा रे।

168 : तुम्हारे जैसे प्रिये कहीं नहीं हैं,
छोड़कर मत जाना मुझे।
तेरे जैसे दोस्त कहीं नहीं हैं,
छोड़–छाड़ कर नहीं जाना प्रिये।

169 : चिकन कजि तेम हंड़ाँ जना,
चिकन कजि तेम गोसा जना,
पीरिति कुलिमेरेओ कम काकाला।

169 : किस बात से रूठ गई,
किस बात से नराज हो गई,
पूछने पर भी बातचीत नहीं करती हो प्रिये।

170 : गड़ा रेमा चिरे, बेड़ा रेमा चिरे,
नाईको नचल सोबेन डुबा जना।
बुरू रेमा चिरे, बेड़ा रेमा चिरे,
नाईको नचल सोबेना बुअला जना।

170 : नदी के तट पर हो या पहाड़ की तराई पर प्रिये,
बाढ़ से तुम्हार हल–फार बह गया।

171 : गिरजा ओड़अः कुन्डम रे,
हाने कुड़ि गेंदाबहा लोदोब् केना।

171 : गिरजा घर के पीछवाड़े में,
ओह प्रिये कितना सुन्दर गेंदा का फूल।

172 : केकरा आँगना में माला मुरूगा,
मुरूगा–मुरूगा कोकोरेचोः।

172 : किसके आंगन में माला मुर्गा,
मुर्गा कोकोरे चोः करके बांग देता है।

173 : झाबू दलाए–दलाए चि फीता दलाए–दलाए,
डिन्डा समय रे कुड़िम नजोमाना।
इलि मंडिम हरा चि कमि नलाम हरा,
डिन्डा समय रे कोड़ाम हड़ाम सेताना।

173 : जवानी में लड़की तुम्हारी मोहनी करती हो
और झालदार झाबू के जैसे उड़ते रहती हो।

174 : टेटेंगा हड़म हाके गोः केते,
सासुराईर ते सेनोः तना।

174 : गिरगिट, बुढ़ा टांगी पकड़कर
ससुराल जा रहा है।

175 : चिमिन मई रेम पौउडर लेना,
पोंपोंडा सारू लेकम नेलोः तना।

175 : तुम कितना पावडर लगाई बेटी
कि सफेद सारू पत्ते जैसे दिखाई देती हो।

176 : काए हुड़िआ दादा, काए मरंग्अः,
ने कुड़ि के दादा लंग् पेड़ाया।

176 : छोटी है न बड़ी,
इसी लड़की को भैया हम सगाई करेंगे।

177 : अपे चि रे दुलाड़ा हगा को,
मनिसाय बुरू लातरा रे।

177 : तुम सभी प्यारे भाईयो
मनिसाय पहाड़ के नीचे हो।

178 : ने हातु रे कुड़िहोनको,
बंग्कोआ को मेनेया जोजो तना को।

178 : इस गाँव में लड़कियाँ नहीं हैं
और लोग कहते हैं इमली जैसे खट्टे हैं क्या?

179 : हडा मांस के बाँयटि तेको गेदेया,
कअ गेदोः–गोदोःतेयअः के हके सरिया।

179 : बैल माँस को बाँयटि से काटते हैं,
नहीं कटाने वाला को टांगी जानता है।

180 : काए हेन्देया दादा, काए पुंडिया,
एन कुड़ि दो दादा पुंडि मंडिया।

180 : न काली न सफेद भैया,
लड़की तो सफेद ही पकाती है भात।

181 : अखड़ा समा गिया, अखड़ा समा गिया,
एला रे रसिका कोड़ा केड़ा कोमें।

181 : अखड़ा खाली है, अखड़ा खाली,
आओ हे रसिक छैला लोगों को बुलाओ।

182 : बराह पट्टी नगेरा किरिञ मेंया दादा,
अखेड़ा गेना–गेनातेंग् गुंजुरावया।

182 : बराह पट्टी का नगड़ा खरीदना हे भैया,
अखड़ा के किनारे–किनारे बजाकर घूमाउँगा।

183 : बड़ि बुटाइंग् सेने केना,
बड़ि माँयोम दोरे जोरो जना।

183 : बरगद पेड़ के पास गया था मैं
तो बरगद का दूध बह गया।

184 : मिडिल पास कुड़ि, मिडिल पास कोड़ा,
पान–पकौड़ीते हिड़े जना।

184 : मिडल पास लड़की और लड़का,
पान और पकौड़ी से ठगे गए।

185 : अले इदि कुड़ि, अले इदि कुड़ि,
करछुल ते लू–लूऐ जोमेंया।

185 : हम लोग विवाह करके लेने वाले लड़की
करछूल से निकाल कर खाती है।

186 : अमदो मई रेम हुड़िंग् गिया,
नानाम लेका सुसुन कम सरिया।

186 : तुम तो बेटी बहुत छोटी हो,
बड़ी दीदी के जैसे नाचने नहीं जानती हो।

187 : आयो लेखे दुलारो, बाबा लेखे पेयारो,
भौजी लेखे दुसुमन रे, मोके देखी दुरा ढापेला।

187 : माँ–बाप के जैसे प्यारे कोई नहीं,
भाभी के जैसे खटपट,
और मुझे देखते ही दरवाजा बंद करती है।

188 : अयुर ते सुसुन कुड़ि,
साया तयअः हिरोः तना।

188 : आगे नाचने वाली लड़की
अपनी साया लहराते हुए नाचती है।

189 : तयोम रे सड़ि कोड़ा,
धूति तयअः बदुड़ोः तना।

189 : पीछे बजाने वाला बाजनिया
उसका धोती खुल रहा है।

190 : झिलि–मिलि, झका–मका, दिसुम मई रेम बगि केदा।
जहाज लेका ओड़अः कोलोम लेकन रचा,
ओड़अः मई रेम बगि केदा।

190 : झिलमिल–झकमक देश और खलिहान के
जैसे सुंदर घर–आंगन को
छोड़ के भी चली आयी।

191 : हरा लेनम मई रे, दड़ि लेना,
एंगा दुलड़ा अपु दुलड़ा बगि कियाते अड़ांदिजना।

191 : पली बढ़ी और जवान हुई बेटी,
माँ–बाप का प्यार छोड़ कर विवाह हो गई।

192 : हातु तला रअः कुदा ढुंकु रे,
बुदु हाईको गुदु–गुदु।

192 : गाँव के बीच जामुन के दाह में
छोटी मच्छलियाँ झुण्ड के झुण्ड होती हैं।

193 : कुड़ि कोअः सुपिद्, कुड़ि कोअः सुपिद्,
कुड़िकोअः सुपिद् रे केवरा बहा लेना।

193 : लड़कियों का खोपा, लड़कियों का खोपा,
लड़कियों के खोपे में केवरा फूल खोसा हुआ था।

194 : गड़ा गेना जुबिला रे,
मिन्डी मेरोमको अतिंग् तना।

194 : नदी किनारे दोन के दलदल खेत में
भेड़–बकरियाँ चर रही हैं।

195 : बराहसाल बाबा चिगो, तिरिल तूकु
रूडुंग्–रूडुंग तेगि सिंगि दोरे डूबुजे जना।

195 : बराह साल धान और केंदू का ओखल में
सामठ से कूटते–कूटते शाम हो गयी।

196 : एला रे पाईन कौआ अड़ागुन में,
सदोम चवांर तेको पसे मेंया।

196 : आ हे, समुन्द्री कौआ उतर आ,
घोड़े के चवांर से लोग तुम्हें फंसाएँगे।

197 : कनटड़ जोजो जुमुला रे, मैना को चेरे बेरे तना,
कनटड़ा जोजो जुमुला रे।

197 : कटहल इमली वृक्ष के झुण्ड में,
मैना चिड़ियाँ कलराव कर रोती–गाती हैं।

198 : कबु बगिया, कबु बगिया,
अड़ांदियाकन कुड़ि के कबु बगिया।

198 : नहीं छोड़ेंगे, नहीं छोड़ेंगे,
शादी किया हुआ लड़की नहीं छोड़ेंगे।

199 : हरा लेनाम मई रे, दड़ि लेना,
जोजो सकम लेकम ओटंग्यना।

199 : पल बढ़ी थीं बेटी, बड़ी हुई थी,
इमली के पत्ते जैसे उड़ गई।

200 : निदा–सिंगि सेने होरा,
सिसिरदअः तेंग् लूमें जना।

200 : दिन–रात आने–जाने वाला रास्ता में,
मैं ओस पानी से भिंग गया।

201 : गड़ा गेना–गेना ते रोहोड़ सकम अतु तना,
एला रे, दुलाड़ा गतिंग् नुतुम ओला कना।

201 : नदी के किनारे किनारे सूखा पत्ता बह रहा है,
आओ हे प्रिये नाम लिखा हुंआ है।

202 : अम हेजे सकम, अइंग् ओले सकम दो,
हायरे गतिंग् सिरिमा रे ओटंग् तना।

202 : तुम तोड़ने वाली पत्ती, मैं लिखने वाला पत्ता तो,
ओ प्रिये, यह आकाश में उड़ा जा रहा है।

203 : बिन्दी दरू रे तूहुड़ तुका लेदा,
ऐ गोई लंग् होटोरिया!

203 : ऐरन्ड के पेड़ में गिलहारी घोंसला बनायी है,
ऐ संगी! चलो हम उससे हूड़ें।

204 : राय–राय दरू रे गिद्दी दुबा कना,
कचिम गिदि्दम नेलेनतन तुञ में तना को।

204 : सूखे पेड़ पर गिद्ध बैठा हुआ है,
अरे गिद्ध देखते नहीं हो क्या?
तुम्हें मारने को तैयार हैं लोग।

205 : गड़ा कुला बिंगा–बंगे,
सुकरी कोए लोडा बड़ा तना।

205 : नदी के किनारे चितकबरा बाघ,
सुअरों को शिकार के लिए देख रहा है।

206 : ओको राजा पलेटन को,
सेनोः तना को रेयोंद–रेयोंद्।

206 : किस राजा के सैनिक,
जा रहें हैं आवाज करते हुए।

207 : सिरगिटि सिरगिटि दुबि सिरगिटि,
हरा लेना चिगो, दरू लेना।

207 : सिरगिटि, सिरगिटि साग भई,
उग आया था कि पौधा लगा हुआ था।

208 : गेल डिन्डा कुड़िको,
राजा दरोम तेको सेनोःतना।

208 : दस कुंवारी लड़कियाँ,
राजा के स्वागत के लिए जा रही हैं।

209 : काठ केरा ढोलोकी, माटी केरा मन्देरा
माटी केरा मन्देरा रे, अखेड़ादिलिकाए।

209 : काठ का ढोलक और माटी का मांदर,
माटी का मांदर अखड़ा में थर्रा देता है।

210 : गेंदा पीड़ि रे गेंदाको इनुंग् तना,
गेंदा पीड़ि रे सिटि सड़िया।

210 : हॉकी के मैदान में हॉकी खेल रहें हैं,
सिटि बजता है हॉकी के मैदान में।

211 : गड़ा–गड़ा ते जोड़ा रूमाल अतु तना,
एला रे पीरिति गतिंग् अड़ागुन में।

211 : नदी के नदी जोड़ा रूमाल बह रहा है
ओ प्रिय नीचे उतर आ।

212 : नदी किनारे गोइया मोरा बैसाय,
गोईया मोरा का सोची सोची रूमाल बनाएला।

212 : नदी तट पर संगी मेरा बैठा हुआ है।
क्या सोच–सोच कर रूमाल बनाते हो संगी।

213 : बुरूवाय तेंग् नेलेलिया, सुपिद् रे रंगा फीता।

213 : पहाड़ के उपर से देख लिया था
उसके जूड़ा में रंगीला फीता।

214 : कटा तेको फदाया, तिः तेको सबेया,
साईकिल होयो लेका सेनोःआ।

214 : पैर से लात मारते हैं, हाथ से पकड़ते हैं,
हवा के समान चलती है साईकिल।

215 : ने कुड़िअः बाउड़ाई दो, हड़म तेयअः कामड़ा के तिकि
लटिज् केदा, ने कुड़िअः बाउड़ाई दो।

215 : इस औरत की नासमझ तो,
अपनी पति का कम्बल को गरम राख में बरकाती है।

216 : आई.एम पड़व जना बाबु, बी. एम पड़व जना,
सरकारी कुड़ि बाबुम बेदा' जाना।

216 : आई.ए. और बी.ए. पढ़लिया बाबू
सरकारी और सुंदर लड़की में ठगा गया।

217 : हारे राँची सहर, हारे राँची सहर,
बिजुली–बिजुली ते पेरेजाकना।

217 : ओह रे राँची शहर, ओह रे राँची शहर
बिजली की चमक–दमक से भरा हुआ है।

218 : सिरमा रेआ अपिर जहाज,
जहाज रेआ जोड़ा रेडियो सड़ितना।

218 : आकाश में उड़ने वाली जहाज,
जहाज में दो रेडियो बजता है।

219 : कताई निंदा बेरे माईया, बेइर उगि गेलाएँ।

219 : कितना सोयेगी बेटी, उठो सूरज निकल आया।

220 : रेलगाड़ी में ना जाबे फोलोरा,
साईकिल में जाबे फोलोरा हवा लगेला।

220 : रेलगाड़ी मे मत जाना फोलोरा,
साईकिल से जायेगी तो हवा लगेगी।

221 : रूमाला में गोलांईचि का फूल रे,
रूमाल में फूला झाबेरा रे।

221 : रूमाल में गोलाचि का फूल रे,
फूल अति सुंदर है।

222 : बुडि तुयु रिटा–राटे,
हड़म तेके देवड़ाएँ दुबाकजा।

222 : बखेड़ा करने वाली बूढ़ी सियार,
अपने पति बूढ़ा सियार को
जादू–टोना के लिए बैठाई हुई है।

223 : गड़ा गेना–गेनाते लोवा बिलि तना हिलि,
टुंकी हिलि किरिंग्अञमें जाजल रेदो।

223 : नदी के किनारे गुलर का फल पक रहा है,
टोकी खरीद कर देना भाभी मुझे तुम्हें खाना है तो?

224 : आयो रोपोल मुनुगा, बाबा रोपोल मुनुगा,
हायरे दादा केताई सुन्दर फूला झबाराए।

224 : माँ और बाप का रोपा हुआ सहेजना,
ओह दादा! कितना सुन्दर फूल लहलहाया हुआ है।

225 : सुतिया अंबा कोड़ोम्बा रे, मुन्डा होन को,
दुनुब्को दुब्लेना, सुतिया अंबा कोड़ोम्बा रे।

225 : सुतिया अंबा के कोड़ोम्बा में
मुण्डाओ ने बैठक किया था।

226 : आई.ए. पढ़ाले बाबु, बी.ए. पढ़ाले,
शादी कराले बाबु डिजल कनेया।

226 : आई.ए. और बी.ए. पढ़ लिया बाबू
तू सुंदर कन्या से विवाह किया बाबू।

227 : अम जगर कजि, अइंग् ओले बकंड़ रे
बहा रे बुसाड़ा जना चि, होयो रे ओटंगे जना।

227 : तुम्हारी बात और मेरा लिखा हुआ वार्तालाप
प्रिये, फूल खिलकर हवा में उड़ गयी।

228 : तार–तार तेम जागरा केना रे,
अइंग् हार तेम लगा जना रे,
अइंग् हार तेम लोगो जना।

228 : तार पे तार बात किया तूने,
मेरे पीछे पड़ कर तू ठगी गयी।

229 : गड़ा गेना रअः बाबा तलङा ओकोए गोड़े
होरोअलंगङा।

229 : हम दोनों का नदी किनारे का धान,
कौन सुरक्षा करेगा?

230 : काइंग् बगिमेंया दुलाड़, काइंग् बगिमेंया,
रूतु–बनाम तेंग् असुलमेंया।

230 : नहीं छोड़ूँगा मैं, नहीं छोड़ूँगा प्रिये,
बांसुरी और वीणा से तुम्हें पालूँगा।

231 : जाऊ–जाऊ रेन पिरिति दुलाड़ गतिंग्,
जाऊगी अमअः कोयोंग् रे लंदा रसिका।

231 : हमेशा–हमेशा के लिए मेरे प्रिये
सदा तुम्हारे गोद में हंसी मजाक।

232 : केरकेट्टा जादु ओड़े लियुड़–लियुड़
दरूरे दुबा कना, केरकेट्टा जादु ओड़े।

232 : मन–मोहनी केरकेट्टा चिड़िया
हवा में हिलती–डुलती पेड़ की डाली पर बैठी हुई है।

233 : रेल गाड़ी रे, बस गाड़ी रे,
सेनोः सिदा रे सिटि सड़िया।

233 : रेल गाड़ी और बस गाड़ी में,
चलने के पहले सिटी बजती है।

234 : राँची गाड़ी हिजुःआ सियुड़े–सियुड़े सिटि सड़िया।

234 : राँची गाड़ी जब आती है दूर–दूर तक
सिटि बजाते हुए आती है।

235 : सिदा जुड़ी दो गोल भाटा लेका रे,
तयोम जुड़ी दो लोवा–बड़ी लेका रे।

235 : पहले की जोड़ी तो गोल बिलईती के समान,
बाद वाली गुलर और बरगद के फल के समान।

236 : काञअः काञअः मेताई तन रे, मामारंग ते
मुदम तुसिंग् किदिञअः,काञअः मेतम तन रे।

236 : नहीं–नहीं बोल रहा हूँ,
फिर भी जबरजस्ती अंगूठी पहना दिया,
नहीं कहने के बावजूद भी।

237 : दिरि ओड़अः पका ओड़अः,
चिअः रे लिपि कम बोलोआ।

237 : पत्थल या पक्का घर में,
क्यों नहीं धुसती हो मुन्नी?

238 : तला पिड़ि रे कालुटी काकारद्,
बुरू परोम रे सन्डी कोकोचोः।

238 : बीच टांड़ में मुर्गी का करकराना,
और पहाड़ के उस पार मुर्गा का बांग देना।

239 : अमअः मन्डा रे दुलाड़ा सुगड़ा गितिल,
कुड़म रे मेंद्दअः दुलाड़ा दिसुम।

239 : तेरे पद चिन्ह में प्यारा सुन्दर सा धूल,
वक्षस्थल में आंसू पानी प्रिये के देश में।

240 : गड़ा गेना–गेनातेंग् होनोरो लेना,
नजोम केवरा, केवरादो बहा लेना।
गड़ा गेना–गेनातेंग् बियुरू लेना,
मुदाई केवरा, केवरादो बुसाड़े लेना।

240 : झरना के किनारे किनारे टहलने गया था,
डाईन केवरा, केवरा का फूल खिला था।
झारना तट के चारों ओर घूमने गया था,
डाईन केवरा, का फूल खिला हुआ था।

241 : ने कोड़ा दो सियूः काए सरिया,
कड़बा–मुठिया के सबे–सबे पहलाए ओताया।

241 : जवान को हाल–फार चलाने आता नहीं, कभी छोड़ता,
कभी दबाता अंत में फार को, पकड़कर दबाता है वह।

242 : गड़ा रेमा पिरिति, बेड़ा रेमा पिरिति, नाईको–नचल
कदल सुबा, रेमा पिरिति कम नेलोःआ।

242 : नदी झरने के पास या तराई पर,
हल चिन्ह या केले के परछाई में हो प्रिय।

243 : बिलाईती रेन पुन्डी सयोब्,
टेटेंगा कोए पसे तना।

243 : बिलायती गोरा साहेब,
गिरगिटों को फंसाते रहता है।

244 : गड़ा परोम रेन हेन्दे ढिचुवा,
कोतो–कोतोए चलेना।

244 : नदी उस पार काला ढेचुवा,
डाली–डाली उड़ता रहता है।

245 : गड़ा गेना–गेनाते लोवा बिलि तना,
खाई–खाई तरा कटा चंगा–चंगाया।

245 : नदी के किनारे–किनारे गुलार फल पका है,
लोमड़ी आधा पैर आगे–पीछे करता है।

246 : गड़ा गेना–गेनाते नहान बाबा को हेरे लेदा, बा लेना
चिरे, गेले लेना, नईको नचल दोरे सोबेन डुबा जना।

246 : नदी तट पर नानियाँ धान बोये थे
फूल–बाली लगा था, हल–फल पानी में डुब गया।

247 : गड़ा जिलिंग्अः, गड़ा चकारा, सेरेंग चेतानते दादए
बंड़ासी तना।

247 : नदी लम्बी है और चट्टान चौड़ा है,
के उपर से बड़े भईया मछली फंसाता है।

248 : नमिन मरंग कोड़ा कमि रेदो लून्दुरा, बराह पट्टी
नगेरा हका सिदाया।

248 : इतना बड़ा लड़का, काम में बड़ा सुस्त,
पहले–पहल बरहा पट्टी नगड़ा टांगता है।

249 : होरागेना रअः खुदी मदुकम, ओह होरे!
मदुकम चारि तेको हलंग्अः।

249 : रास्ते किनारे का छोटा–छोटा महुआ,
ओह रे महुआ खेइरका से चूनते हैं।

250 : ओको राजाए जनम लेना,
सिरिमा रे इपिल तुरे लेना।

250 : कौन राजा जन्म लिया था,
आकाश में तारे उग आये थे।

251 : हेरोद राजा परिया रे,
तरानेते मंयोम जोरो तना।

251 : हेरोद राजा के काल में,
कन्धे से खून बहा था।

252 : सिंगि दोरे हसुर लेना,
गोटा दिसुम नुबअः जना।

252 : शाम हो चला था,
पूरे जगत् में अंधकार हो गया।

253 : हातु तला बंदा अड़ि रे,
जोड़ा सेरालिकिन अड़गु लेना।

253 : बाँध के मेंढ़ पर,
जोड़ा घाटो चिड़िया उतर आयी थीं।

254 : अटा–मटा बिरको तला,
सेनहोरा इसु बलाया।

254 : घने जंगलों के बीच,
रास्त चलना बहुत मुश्किल है।

255 : बड़ि बुटाइंग् सेने केना,
बड़ि मंयोम दोरे जोरो तना।

255 : बरगद् वृक्ष के पास गया था मैं,
बरगद से गाध रूपी खून बह रहा है।

256 : बड़ि दरू रे राम ढेलुवा,
तोलोंग् तमअःदो अखेड़ारेआ

256 : बरगद् पेड़ मे रामढेलुआ,
झालरदार पूँछ तेरा अखड़ा में।

257 : हलंग् लेरे मदुकम, तुम्बल लेरे मदुकम
मदुकम रूचुरेगी रोहोड़ाकना।

257 : चुनने मे महुआ, जमा करने में महुआ,
खुरदरा महुआ गुच्छा में ही सूख गया।

258 : गड़ा दअःदो लेंगेद्–लेंगेद लिंगितना
नईको नचल सोबेन डुबा जना।

258 : नदी का पानी तरंग में बह रहा है,
नदी–नाला और हल–फार सब कुछ डूब गया।

259 : होरा जिलिंग्अः होरा संगिनअः,
ओह रे गतिंग् ओकोरे लंग् नपामा?

259 : राह बड़ी लम्बी और बड़ी चौड़ी है,
ओह रे प्रिये! कब हम दोनों मिलेंगे?

260 : ने हातु रे कोदे काको रोरोया,
तूलुई–लूसुई गेलेयाकना।

260 : इस गाँव में मँडुंवा रोपते नहीं,
पर झबरैला बाली लगा है।

261 : कांसी पीड़ि लो तना दादा,
चांची को कोतअः रेको गितिजा?

261 : कांसी का टांड़ जल रहा है भैया,
चांची चिड़िया सोयेंगे कहाँ?

262 : गेल बरिया रतन दुअर,
बइयाकना चिगो चोआ सुगड़ा!

262 : बारह रत्नों का दरवाजा,
बना हुआ है, कितना सुन्दर।

263 : सिंगि दोरे तुरे जना,
रचा–गूरिज् दो मईना कम रिका'कादा।

263 : सूरज उग आया है,
क्यों अंगना–गोबर नहीं करती हो बेटी?

264 : सिरिमा सितुंग् ओतेलोलो ते,
सिंग्–सुबा दरूको रोहोड़े जना।

264 : चिलचिलाती धूप से,
पेड़–पौधे सब कुछ झूलस गया।

265 : दुल्हा बाबुई हिजुः तना,
लोटा रे दअः ओड़ोंग्एपे।

265 : दुल्हा बाबू आ रहा है,
लोटा से पानी निकाल कर दीजिये।

266 : सिरिमा दिसुम सुकुआ को मेनेया!
सिरिमा दिसुम चोआ सुगड़ा !

266 : परलोक बहुत निराली है कहते लोग,
त्रिलोक देश भी बहुत ही सुहावना है।

267 : सिंगि मरसल सेनोः जना,
दिसुम सोबेन नुबअः जना रे।

267 : सूर्य प्रकाश चला गया,
पूरी दुनिया अंधकार में हो गया।

268 : तिरिल तरोब जरोमाकना,
दिरि टुकु तेको रिमे रूकुया।

268 : केउँद–चार जब पकता है,
पत्थर से मार कर गिराते हैं।

269 : अम चिया तोरोद् दिरि टेटेंगा,
उहूर तमअः ते बनम सड़िया।

269 : हो तुम गोई, चट्टानी गिरगिट हो,
तुम्हारे चमड़े से सारंगी बनाकर आवाज निकलते हैं।

270 : चुटु–हुनि बिलाई घंटी,
ओकोएअः होटो रे घंटी सड़िया?

270 : चूहा–चूहिया, बिल्ली की घंटी को,
गले में घंटी कौन पहनाएगा?

271 : हने हिलि दरू चुटि,
साड़ी, साया तमअः ओटंग् तना।

271 : ओ देखो भाभी! पेड़ की चोटी!
साड़ी–साया तुम्हारा उड़ा जा रहा है।

272 : डिण्डा कुड़ि तिलाए सहन,
हाने मंडि–उतू रोंगो जना।

272 : जवान लड़की, तिलाय लकड़ी,
ओह! भात–तियन जल रहा है।

273 : डाड़ी दअः हेन्दे चटु,
मंडीचटु सोबेन बुअल जना।

273 : डाड़ी का पानी और काला घड़ा,
भात–तियन हांड़ी बह रहा है।

274 : मजा–मजा साड़ी, मजा छापा साड़ी,
दुलड़ रे अचरा रेदो दुलाड़ टेटेंगा।

274 : सुन्दर–सुन्दर छापा साड़ी और,
प्रिया के आंचल में प्यारा गिरगिट है।

275 : पीड़ि दिसुम रे मई दो गोङए जना,
गोंएठा हलंग् ते मई दोए लगा जना।

275 : जंगल रहित क्षेत्र में बेटी बिदा हो गई,
गोंयठा चुनते–चुनते थक गई।

276 : चुपद् रे सेंगेल जुले तना,
तिरिल पतेड़ा गोसोजना।

276 : झाड़ी में आग लगा है,
केन्दु का पत्ता मुरझा गया।

277 : डुबालेना डुबालेना, ओते दिसुम डुबा लेना
मनोवा को सोबेन डुबा लेना।

277 : डुब गया था, जगत् डुब गया था।
मानव सभी डुब गये थे।

278 : इति तुयु रनअःदो इति तुयु रनअःदो,
मेरोमको चाए, काए नमानते, हुअए–चुकाया।

278 : ओह! सियार का रोना, सियार का रोना
भाई बकरी नहीं पाया इसलिए हुआए–चुकाए रोता है।

279 : अमदो उलि चुटि रेमा,
तोलोंग् तमअःदो बकाडीरेया।

279 : तुम आम की चोटी में हो,
झालदार पूँछ तेरा बगान में।

280 : ने हातु तला रे बिन्डा जोजो,
जो तेना, सकमते दलोबाकना।

280 : इस गाँव के बीच नेठो जैसे इमली
पत्ती फल से ढका हुआ है।

281 : पिरिति सोना कोतेम सेनोः जना?
मेंद् दअः जोरो तना, अमाइंग दंड़ाँ तना।

281 : अति सुन्दर प्रिया कहाँ चली गई
आँखों से आँसू पानी गिर रहे हैं तुम्हारी खोज में।

282 : अलंग् दोरे कलंग् अड़ांदिना,
अलंग् रे कोरोंजो दरू बहा लेना।

282 : हम दोनों शादी नहीं करेंगे
दोनों के बीच में करंज पेड़ का फूल हुआ है।

283 : राँची होरा कलिकत्ता,
बियुर कना दादा सोकोर कना।

283 : राँची कलकत्ता का रास्ता
चारों ओर घुमावदार है दादा।

284 : इसुकुलम पहामा, रसिकायोम पहामा,
रसिका रसिकाते रे सेंड़ाँम अदेया।

284 : स्कूल भी सोचते हो, और छैलापन भी,
छैलापन और रसिकता से भटकोगे।

285 : अमदो मई रेम हुड़िंग्गिया
नई गितिल रेम निरे सेनेया।

285 : तुम तो बेटी बहुत छोटी हो
नदी बालू में दौड़े चलती हो।

286 : अमलेका दुलाड़ काइंग् नमकोआ,
अलो रे दुलाड़ा हेताबगिञा।

286 : तुम्हारे जैसे प्रिये नहीं पाउँगी
प्रिये मुझे छोड़कर मत जाना?

287 : दुरंग् भजन रेम सेन होरा केदा,
रसिका रसिकाते सेंड़ाँम अदेया।

287 : गीत–गोविन्द राह में चली गई
आमोद–प्रमोद में भटक गई।

288 : ओको रेया हो जीउ सुकुरसिका,
ओको रेया हो जनव कसाला।
सिरिमा रेया हो जीउ सुकुरसिका,
दुकु रेया हो जीउ कसाला।

288 : कहाँ है मन का सुख
कहाँ है हमेशा दुःख–दर्द।
परलोक में है भाई सुख
नरक में है दुःख और दर्द।

289 : अमदोरे दुलाड़ जुड़ी दोम नमाना,
अइंग्दोरे दुलाड़ जुड़ीतेंग टुअर जना।

289 : तुम तो प्रिया प्यारा साथी पायी
मैं तो प्रिये से अनाथ हो गई।

290 : मंड़ाँबुरू हड़म हलुमान,
मेरोम कटा तेको टेम्पा लिया!!

290 : यमदूत रूपी पहाड़ और हनुमान को
बकरी के पैर से डंडा चला दिये।

291 : हेन्दे रिमिल चेतन पुन्डी रिमिल,
दुलाड़ा जहाज रेमा चिरे कम नेलोःआ?

291 : काला और सफेद बादल आकाश में
प्रिये हवाई जहाज में दिखाई नहीं देते हो।

292 : पूरब दिशा रे रिमिल रकाबेया रे,
पचिम दिशा रे दअःए गमाया रे।

292 : पूरब दिशा में बादल चढ़ आता है
और पश्चिम दिशा में बादल बरसता है।

293 : हातु तला बंदा अड़ि,
उमेन तना चिरमे चपिन तना।

293 : गाँव के बीच बाँध के मेंढ़ में
नहा रहे हो या धोवा रहे हो प्रिया।

294 : हातु तला बिन्डा जोजो,
कअ'कोरे रूकुया बिन्डा जोजो।

294 : गाँव के बीच का नेठो इमली को
झकझोरते नहीं हैं नेठो इमली को।

295 : गड़ा रेयो कोरोंजो, बेड़ा रेयो कोरोंजो,
कोरोंजो सकमको रेयो जो'अकना।

295 : नदी के बीच में नदी तट पर
करंज का पत्ता फूल लगा हुआ है।

296 : सकोम सेक् सड़िया, सकोम सेक् सड़िया,
अयुर ते सुसुन कुड़ि सकोम सेके: सड़िया।

296 : खनकती चूड़ी की आवाज, खनकती चूड़ी की आवाज,
आगे नाचने वाली लड़की की खनकती चूड़ी की आवाज।

297 : हनते रौउड़ेकेला नेते बंडा मुन्डा,
मरंग् गोमके जयपाल सिंग् रिडियो खुटाव कदा।

297 : उस पार रौउरकेला इस पार बंडा मुन्डा
मरंग् गोमके जयपाल सिंग रेडियो बांध रखा है।

298 : जोजो सकम पिर पिर ओटंग् तना
सोना लेकन जीउ ओटंग् तना।

298 : इमली पत्ते के जैसा लहरते हुए इमली
और सोना रूपी मेरा दिल भी उड़े जा रहा है।

299 : जरा गेना समतल पीड़ि रे,
चितिरि होनको रिसा–पसाया।

299 : झाड़ी किनारे समतल टांड़ में
चितिरि पक्षी खेल में चिन्हित करते हैं।

300 : अइंग्दो अमाँना! डूलु चि पंपालद्,
अइंग्दो उमाँना! जलातिंग् तना।

300 : माँ! मैं फनिगा या तितलि हूँ,
और उड़–फिर रही हूँ।

301 : सात समुन्द्र लंका परोम,
दुलाड़ा नेल मेरेओ कम नेलोःआ?

301 : सात समुन्द्र लंका पार
प्रिये देखन की चाह में दिखाई देते नहीं।

302 : हाय हलुमान सीताके दंड़ाँ नंग्,
सेनोःजनाम लंका टापू।

302 : ओह! हनुमान सीता की खोज में
चला गया तुम लंका पार टापू।

303 : पिटपिड़ि उलि सुबा रे,
गति मेनते लंग जगर केना।

303 : बाजार टांड़ आम पेड़ के नीचे
साथी समझकर हम दोनों बातें किये थे।

304 : कुन्दुरी रचा रे साया अलोम तसिया,
कटिया नमकेरे दोए कोको–कोरोया!!

304 : कुंदरी लता के मचान में साया मत सुखाना
चूहा कुतर–कुतर कर बिल में ले जाता है।

305 : जहाज रेलंग् रकाबा, रेल रेलंग् रकाबा,
गति रे,निरालंग, निरालंग् रे असम तेलंग्।

305 : जहाज और रेल में सवार करेंगे
और दोनों भागेंगे असम को।

306 : ने हातु रअः सुकु–रसिका,
सुड़ा–सगेन ते दलोबाकना।

306 : इस गाँव का हंसी मजाक,
कोमल लताओं में श्रृंगार हुआ है।

307 : अमदो मई रेम हुड़िंग गिया,
चारि चटअः चार–चार कम सरिया?

307 : तुम तो बेटी बहुत छोटी हो,
बांस का खेइड़का फाड़ने नहीं जानती?

308 : किता तुम्बुली हले, किता तुम्बुली,
किता तुम्बुली हले, काको तूतुड़ा।

308 : छोटी तुम्बील रे भाई! छोटी तुम्बील!
डंक मारते ही नहीं रे भाई!

309 : राँची जिला हो हिचिरा–बिजिरा
राँची कमडरा,राँची जिला, तोरपा थाना।

309 : राँची जिला की दिखावटी चमक–दमक
राँची, कमडरा राँची जिला तोरपा थाना तक।

310 : सुसुन करम रे, मनोवा जेताए काए मना दड़िया।

310 : अखड़ा के नाच गीत में कोई मना नहीं करता।

311 : नमिन मरंग् अखेड़ा रे रसिका पेरेजाकना
दादाइंग्अः जुड़ी तयअःदो काए नेलोःआ।

311 : बड़े अखड़ा में खुशीयाली छाई हुई है
पर बड़े भैया के जोड़ी दिखाई नहीं देती।

312 : चोंचा रे, चोंचा चराई,
खिजुर डाली में ढेलुवा झुकाए।

312 : चोंचा चिड़िया रे भाई! चोंचा चिड़ियाँ!
खिजूर की डाली में ढेलुवा झुकता है।

313 : के रोपालैं हरियारो गेंदा फूल,
चारियो कोना में झाईल–झबाराए।

313 : किसने रोपा हरी–भरी गेंदा का फूल,
चारों ओर झबराया।

314 : मनि बकाड़ीरे कुलहाय होन दो,
मनि जोम तनाए, कुलहाय होनदो।

314 : सरसों खेत में खरगोश का बच्चा,
खा रहा है सरसों का फूल खरगोश का बच्चा।

315 : गड़ा गेना लिदि–लिदि गोलांईचि बहा,
लोदोब् लेका बहा लेना रे, दीया लेका जुलेतना।

315 : नदी तट पर सुन्दर गोलांइचि फूल
बहुत ही सुन्दर दीये के जैसे खिल रहा है।

316 : जोजो बुटा जोड़ा अखेड़ा,
पिरिति पाउडर केतेम ओड़ोंग् लेना।

316 : इमली पेड़ के पास का जोड़ा अखड़ा में,
प्रिया पाउडर लगा का नाचने चली आयी।

317 : हसा रअः चटु, बुसूःरअः बयर, कुदारअः डाड़ी,
मंड़ि–मंड़ि ते मई बुरअःएमें।

317 : मिट्टी का घड़ा और पुआल की रस्सी से
और जामुन पेड़ की लकड़ी की चुआं के पानी को
प्यारी बेटी! धीरे–धीरे निकालना।

318 : गड़ा–गड़ा ते खाई–खाई रअःतना,
खाई–खाई रअः तना रे, दुलाड़ाए दंड़ाँ तना।

318 : नदी के किनारे लोमड़ी रोते–रोते,
अपनी प्रियतम को खोज रहा है।

319 : सलंगी बुरू चेतानाएते
रेलगाड़ी हादुड़े जना।

319 : पहाड़ की ऊंची तराई से
रेलगाड़ी गिर गई।

320 : दातो हिलि तराकेचअः होलोंग्
दादाञए असि तना।

320 : ओ भाभी आधी रोटी देना,
मेरे बड़े भाईया मांग रहे हैं।

321 : सरिगिचि हिलि सरिगिचि हिलि,
टेटेंगा चअःलोम कुड़ि रानु बइओःगा!

321 : वास्तव में क्या भाभी?
गिरगिट की पूंछ से लड़की दवा बनती है?

322 : दुबि सिरिगिटि दुबि सिरिगिटि,
हरालेना दड़ि लेना दुबि सिरिगिटि।

322 : गंदुर गढ़ा का भाजी साग निकल कर
उग आया था, गंदुर गढ़ा में भाजि साग।

323 : जोड़ा नगेरा, जोड़ा नगेरा,
कुड़म रे दिलकावअःरे जोड़ा नगेरा।

323 : जोड़ा जोड़ा नगड़ा,
दिलको थर्राता है जोड़ा नगड़ा।

324 : अमअः चिरे मईको अड़ांदि केना,
तिरिल पतेड़ाको झामेडा लेदा।

324 : तुम्हारी शादी के मड़वा में
केंउद के पत्ते से झामड़ा बनाये थे क्या?

325 : झिमिर झिमिर दअःए गमाया,
जरगी जोबिला रे इपिड़े पियुंग पियुंग।

325 : धीरे–धीरे पानी बरसता है,
जोबला में धीमे–धीमे भगजोगोनी प्रकाश देती है।

326 : सिंगि हसुर रे जेरेम जेरेम कुड़ि,
चोओःलिरेदो मरचि लेकाए हेड़ेमा।

326 : पश्चिम की सुन्दर सुनयना सुन्दरी,
चुम्मा करने पर मिर्च के जैसे स्वाद लगती है।

327 : अयुर तोलोंग् दादा, दोया तोलोंग्,
नगेरा गेना दादा हिरोःतना।

327 : आगे और पीछे का झालदार पूंछ दादा,
नगड़ा के किनारे किनारे उड़ रहा है।

328 : बुरू दिसुम टोनंग् कंदर,
चिअः कपे होरोया उतुंड़ तना।

328 : पहाड़–पर्वत जंगल–झाड़,
क्यों रक्षा करते नहीं हो उजड़ रहा है।

329. ओते–हसा, बुरू–दअः,
चिअः कपे जताने चबा तना।

329 : जगह–जमीन, पहाड़ झरना,
क्यों रक्षा नहीं करते हो समाप्ति की ओर है।

330 : दिरि–टुकु गड़ा गितिल,
चिअः कपे दोहोया चबा तना।

330 : पत्थल चट्टान, नदी बालू,
देख–रेख क्यों नहीं करते खात्मा की ओर है।

331 : हातु–तुका दिसुम जटि,
चिअः कपे जताने ओड़ॉ तना।

331 : गांव–घोंसला देश की चटाई,
क्यों रखवाली करते नहीं बिगड़ते जा रहा है।

332 : सात केवड़ बितर रेम गितियाकना
मसुरी जालोम तेम जलोमा कना।

332 : सात दरवाजे के अंदर सोयी हुई हो
मसुरी जाल में फंसी हुई हो।

■■■

The Different kinds of Rhythm "विविध प्रकार के खोद" मुण्डा कोअः सुसुन-दुरंग-करम रेअः बिनगा-बिनगा "खोद" सड़ि

1 : भजन : दुमंग : गेदंग गेदंग तुरदा नतुर ,तुरदा गेदंग – 2

डुलकी : गेजंग जगिंड़ी गेनेजंग, गेनेजा गेदंग – 2

नगेरा : गुंडुम गुंडुम गुंडुम –उकुडू गुडुम गुंडुम – 2

2 : डमकचः दुमंग : देदंग देदंग, तुंग देदंग.

ढॉक : ढड़ंग टटला टटला, ढल ढल ढल टटला.

डुलकी : गेदड़ी गेदड़ी,एतड़ी गेदड़ी गेदड़ी.

नगेरा : गेडागी गेडागी, इकड़ी गेडागी गेडागी.

3 : गड्डुवा : दुमंग : तुरदा गेदगी, एकेदा गेदगी दतुर पेद्पेद् पेद्पेद् .

डुलकी : डेडेगा डेडगी,एकेडा डेडगी डेडगी चकडुम चकडुम. डिगिडा गेडगी, इकिडा गेडगी, उकुडुम उकुडुम

4 : गेना : दुमंग : दॉएःक तुर्र देदंग तुर्र, देदंग नतंग ताए–ताए.

डुलकी : जॉएक जंगिड़ी गेजंग ता, गेजंग नचिड़ी ता.

नगेरा : गुंडुम गुंडुम, गुंडुम गुंडुम ,गुंडुम उकुडु गुंडुम .

5 : जदुर : दुमंग : दअःता नतंग–नतंग, तुर दड़ंग.

डुलकी : दगिड़ी गेदंग–गेदंग तॉः, गिड़िता गेदंग–गेदंग तॉः

नगेरा : गुडुम गुंडुम–गुंडुम, गुडुम–उकुडु गुंडुम.

6 : जपि : दुमंग : तुंग गेदंग तुंग दॉए, तुंगदा नतंग तूंग दॉए.

डुलकी : डेडेद् गेडा डेडेद् था, डेगेडा गेडा, डेडेद् था.

नगेरा : गुडुम गुंडुम गुंडुम, गुडुम–उकुडु गुंडुम

7 : जरापि–मगेः दुमंगः दिदंग नतुंग दिदंग दॉए, दुबुंग नतुंग.

डुलकीः जिंडिगी नकिडि इकिजी नकिडी जंडिंग.

नगेराः नगिडा गेडगी, इकिडा गेडगी गेडगी.

8 : चिटिद्–करम :

दुमंग : दिदिगी दिदगी, दतुंग, दिदिगी दिदगी दबंग.

डुलकी : डेडगी नटिगी डेडेन ,डेडगी नटिगी डेडेन.

नगेरा : डुगूडुम–उकुडु डुनडुम,
डुगुड़म–उकडु डुनडुम.

9 : खेमटा : दुमंग : देदंग तुर्र देदंग तुर्र ,दिगिदा देदंग, इकिदर देंग, देदंग तुर्र.

डुलकी : डेडेंग–डेंग, डेडेंग–डेंग, डेंगडे डेडेंग एकेडेंग डेंगडे–डेडेंग .

नगेरा : गुडुम गुंडुम–डुम, गुडुम गुंडुम डुम, उकुडुम–उकुडु गुंडुम.

10 : ओर जदुर :

दुमंग : दॉएः दॉएः कॉएःक् तुर्र , दॉएः दॉएः गेदंग तुर्र.

डुलकी : डेडंग टंडुम ता, डा–के टंडुम टंडुम ता,

नगेरा : गुडुम गुंडुम गुंडुम , गुड़कु गुंडुम गुंडुम.

11 : ओर मगे :

दुमंग : दॉएःक दंग दॉएः, दॉएः दॉएः दॉएः.

डुलकी : डुडुइंग डुइंग डुडुइंग ता, डुडुइंग डुइंग डुडुइंग ता .

नगेरा : गुडुम गुंडुम गुंडुम , गुंडुम गुंडुम गुंडुम.

12 : ठाड़ लहसुआ :

दुमंग : दतुर गेदंग तुर, गेदंग दतंग.

डुलकी : दगिड़ी गिड़िदा इंकिड़ी
गिड़िदा गिड़िदा.
नगेरा : गिड़ी गिडा गिडा, इकिड़ी गिडा
गिडा

13 : मगे गेना :

दुमंग : तुरदॉएः टुबुंग देदंग, दॉएः दुबुंग.
डुलकी : देदंग तॉएः देएःडे.
नगेरा : कोड़ोम गोंडोम गोंडोम.

14 : रमल चिटिद् करम छलकुआ :

दुमंग : देदंग देदगी दॉएः दतुंग दंग,
देदंग देदगी दॉएः देदंग देदंग–2
डुलकी : डेद् डेद् डेद् डेडेद् तॉएः तॉएः,
डेडेद् डेडेद् तॉएः तॉएः–2
नगेरा : डिडिल डिडिल डिडिगी डिडिल,
डिलडिल डिडिगी,डिडिगी
डिडिल–डिडिल–2.

Notes : Also the Following ways of the beating the dumang drum -

1 : दॉएः–दॉएः When the drummers on their way to a fair or when they make the sound of the village on the Mage Feast.

2 : दॉः तुर दॉः तुर or दॉः दतुर, दॉः दतुर When the drummers and those who shouts "हला! हला" drive the cattle three times abney the main road of the village on the Sohrai Feast.

3 : Natural Sound of Dumang :

मङ–मङ

Natural Sound of Nagera :

गिदिल–गिदिल, गिड़िम–गिड़िम,
गुंडुम गुंडुम, लिदिम–लिदिम.

Natural Sound of Dulkee :

डबुंग–डबुंग ताक–ताक – नगुरी.
टुम्बाः–टुम्बाः ताक–ताक – हसादअः

Natural Sound of Dhank

ढल–ढल, टड्र–टड्र.

सा-सुसुन-दुरङ रअः डुलकी
दुमङ खोद को

1 : गेना– नकुट केड़तड़ी गेंजड़ी जंगेन,
नकुड़ केड़तड़ी केड़न्ता गेजंग.

2 : जदुर – गेंजंग गेंजेन गेंजेन ताक .....

गेंजंग गेंजेन गेंजेन ताक ,

गेंजंग गेंजेन गेजेन ताक ,

केड़न्ता गेंजंग गेजेन केड़ेन ,

गेनजे नकुडु गेंजंग जेनडेन गेजंग .....

3 : जपि – गेजंग जनड़ेन गेड़ेन्ता ,
गेजंग जनड़ेन गेड़ेन्ता ।

4 : जरापि – गेजड़ी नकुडु जनडेंग गेजड़ी नकुडु ,
नकुट केड़तड़ी .

5 : ओर जदुर – गेजंग जनड़ेन गेःजे नकुडु ,
केड़न्ता गेजंग, गेःजे नकुडु ।

6 : हम्बल करम – गेंजड़ी जंगेन गेनजड़ी नकुडु गेंजड़ी ,
नकुडु गेंजड़ी जंगेन– नकुट केड़ेतंग ।

7 : लहसुआ करम — गेजड़ी नकुडु नकुड़ जनडेन
गेंजड़ी, नकुडु केनता
गेजंग,—नकुट केनतड़ी।

8 : चिटिद् करम — नकुट केड़ताड़ी केड़ताड़ी
ताक, गेंजड़ी जंगेन गेःजे नकुडु
गेजंग।

9 : खेमटा — तकझी नतंग, तकझी नतंग
केड़तंग तांग, गेजंग गेड़ेन,
गेजंग गेड़ेन गेड़ेन गेजंग, तकझी
नतंग गेजन गेड़न गेड़नक
गेजंग।

नोट — ने सुसुन—दुरंग् खोदको
सिरिमायन मइनन मरटिन सुरिन,
कुलबुरू बारूटोला गअः परतब् ते।

समीक्षकों के मंतव्य

'सेनगी सुसुन कजिगी दुरंग' को ओल सातोःओ ओलवेद् मोड़ॉ गोमके मइनन रेमिस कन्डुलना हगा–परचार, अयरते ओड़ओःए मोड़ॉएका मेनतेंग उसकुरी तना।

इनिःअ ने हुंडि–तुसंग्–जमा कमि मेनते पुरअःपुरअःजोअर रूअड़ होबाओःका

वाल्टर भेंगरा
वरिष्ठ हिन्दी साहित्यकार, रांची

किसी भी समुदाय के लिए अत्यावश्यक है कि उस समाज की भाषा व संस्कृति कभी विलुप्त न हो। इसे ध्यान में रखते हुए माननीय लेखक व कवि श्री रेमिस कन्डुलना अपने व्यक्तिगत प्रयास द्वारा मुण्डारी काव्य तथा गीत संग्रह के रूप में समृद्ध बनाने के लिए अपनी योगदान दे रहे हैं। इस कार्य के लिए मैं उन्हें बधाई देना चाहता हूं।

आशा है कि मुण्डारी भाषा के अन्य ज्ञाता भी इस दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे, ताकि हमारे देश की सबसे पुरानी भाषा अर्थात मुण्डारी सदा जीवित रहे। ढेर सारी शुभकामनाओं के साथ श्री रेमिस कन्डुलना जी से इस तरह के रचनात्मक कार्यों की कामना करता हूं।

इग्नेस केरकेट्टा
भूतपूर्व शिक्षक, संत जेवियर्स हाई स्कूल, डोरण्डा, रांची

'सेनगी सुसुन कजिगी दुरंग्', मुनु होड़ो कोअः मुंडा सुसुन, दुरंग्, दुमंग, डुलकी, नगरा, रब्का, सड़ि ते इसु पुरअः इकिरन इतुन सेंड़ॉ को नितिराबु तनाए। ओड़ओः नंग्को परियाएते तइन तन होड़ो कोअः इकिरन ससंकिर उड़ुःपहम को हरा पोसा, जोगव–जतन, पोसा–पसराओःका मेनतेए एयोन आद उसकुर बु तनाए।

ने ओनोल को मेनते मइनन रेमिस कन्डुलना के इसु पुरअः जोअर ओड़ओः बधाई।

डा. मरकुस बारला

इकोनॉमिक्स विभाग, संत जेवियर्स कॉलेज, रांची

कई युग से उपेक्षित के बावजूद आग्नेय भाषा परिवार की मुंडा भाषा जीवित है। दो पंक्ति की कविता आदिवासी समाज को बहुत कुछ संदेश देती है। खड़िया, संताल, हो, गदाभा, सावर, बिरजिया, कोरवा, बीरहोर और असुर भाषा के साहित्य को आगे बढ़ाने में मददगार होगी ऐसा मेरा आशा और विश्वास है।

इस प्रकार के गेय काव्य का संग्रह करने वाले श्री रेमिस कन्डुलना जी को बहुत बहुत बधाई देता हूं।

पो. फा. एफेम बअः

इतिहास विभाग, संत जेवियर्स कॉलेज, रांची

'सेनगी सुसुन कजिगी दुरंग्' लेकन दुरंग्को रांची जपअः रेन मुंडा को कअको सरि तना। एना मेनते ने लेकन दुरंगको हुंडि जरूरी मेनअः। ने लेकन दुरंग्को कअ तइनोः रे आदिवासी समाज रअः बला–सका रे रसिका बनोःआ।

पौलुस तोपनोः

प्रचारक, होली एंजेल्स चर्च डोन बोस्को, कोकर, खोरहा टोली, रांची

'सेनगी सुसुन कजिगी दुरंग्' मुण्डारी गेय काव्य संग्रह अपने आप में अद्वितीय है। मांदर, ढोलक, नगड़ा और रबका बाजा के साथ आदिवासी समुदाय, दो पंक्तियों की कविता को बड़ी सरलता के साथ अखड़ा में व्यक्त करता है। इस प्रकार से लोगों के बीच व्यक्त करना बहुत ही सुखद है। मुंडा भाई बहनों के अलावे गैर मुंडा भाई–बहन और साहित्य प्रेमी इसे पढ़कर अपनी समुदाय के भाषा साहित्य को आगे बढ़ायेंगे, ऐसी मेरी आशा और विश्वास है।

श्री रेमिस कन्डुलना जी के प्रयास की सराहना और बधाई देता हूं।

डा. प्रो. जुलियस आइंद

कॉमर्स विभाग, संत जेवियर्स कॉलेज, रांची

'सेनगी सुसुन कजिगी दुरंग्' गीत संग्रह की पांडुलिपि देखने का सुअवर प्राप्त हुआ। अपनी मातृभाषा मुण्डारी में गीत कविता, कहानी, लेख कई वर्षों से लिखते आ रहे हैं। सेनगी सुसुन कजिगी दुरंग् नगड़ा गीत संग्रह में बहुत ही मधुर भाषा का प्रयोग किया गया है। इससे समाज के प्रति पुरखा साहित्य की अटूट प्रेम झलकती है तथा सामाजिक दर्शन के मूल विषय पर गंभीर चिंतन को मजबूर करता है। यह संग्रह न केवल मुण्डाओं के बीच बल्कि समस्त पुरखा साहित्य प्रेमियों के बीच में प्रशंसनीय साबित होगा।

श्री रेमिस कन्डुलना जी के मुण्डारी गीत संग्रह के लिए इनको बहुत बहुत शुभकामना एवं बधाई देता हूं।

डा. जोन कन्डुलना
कटहल टोली, बहुबाजार, रांची

आधुनिक मुण्डारी भाषा साहित्य के उभरते कवि श्री रेमिस कन्डुलना जी, मुण्डारी कविता की आधुनिक धारा के कवियों में से जाने जाते हैं। श्री रेमिस कन्डुलना कवि, गायक, साहित्यकार निर्माता के साथ–साथ दार्शनिक नगड़ा गीतों के मर्मज्ञा भी है। इस गीत संग्रह में अपनी भाषा–संस्कृति के साथ मुण्डारी गीत भजन को साहित्यिक रूप देने का भरसक प्रयास किया है। यह संग्रह मुण्डारी साहित्य अमूल्य निधि के रूप में भावी पीढ़ी के लिए काम करेगा।

मैं इस अमूल्य कृति के लिए श्री रेमिस कन्डुलना जी की सराहना करता हूं।

डा. खातिर हेमरोम
रांची

संग्रहकर्ताओं का परिचय

रेजन तोपनोः
तोरपा मद्टोला, खूंटी
जन्म : 1941
राँची कॉलेज राँची से स्नातक
भारतीय डाक एवं तार विभाग में 30 साल तक सेवा
वर्ष 2011 को सेवानिवृत
मुंडारी लोक गीतों एवं कथाओं का संकलन
आदिवासी परंपारिक खेती–बारी में दक्ष
रूचि : आदिवासी गीत–संगीत एवं नगड़ा ढोलक मांदर बजाने में दक्ष

जोआकिम तोपनोः
तोरपा मरंग् टोला. खूंटी
जन्म : 4–2–1952
संत जेवियर्स कॉलेज, राँची से स्नातक
भारतीय डाक एवं तार विभाग से वर्ष 2012 को सेवानिवृत
रूचि : मुन्डारी साहित्य एवं क्षेत्रीय पत्र–पत्रिकाओं में समय–समय पर लेखन
निवास : प्रेम नगर, कांके, राँची

मिसि मगदली तोपनोः
जन्म स्थान : गटीबंदु जितुटोली, सिमडेगा
शिक्षा : इंटर
रूचि : मुंडारी गीत, संगीत एवं नृत्य
मुण्डारी लोक कथा एवं कहानी

पतरस बुढ़
टोमडेल, गोईलकेरा, प. सिंहभूम
जन्म : 14–11–1952
एस॰ एस॰ हाई स्कूल, बानो, सिमडेगा से मैट्रिक
भारतीय वन विभाग में नौकरी
सेवानिवृत : वर्ष 2012
निवास : कोकर, खोरहा टोली दुअंबा, एच॰बी॰ रोड, राँची

मिसि सेवानती सुरिन
पलामू, खड़िया, टुरी चंदवा, लातेहार
जन्म : 2007
शिक्षा : पाँचवी
रूचि : मुंडारी भजन, गीत, संगीत, नृत्य एवं कहानी

अरुण अगपित तोपनोः
तोरपा मद्टोला, खूंटी

बेने तोपनोः
एस॰बी॰आई॰ मैनेजर, कुन्डपानी, पलामू

अलफॉस गुड़िया
एल॰आई॰सी॰, डी॰आर॰एम॰, सिन्घुरवा, पलामू

एल॰एस॰ हेम्बरोम 'सेरेंग'
तोरपा, कसम्बर, खूंटी

अनुवादक व संपादक रेमिस कन्डुलना का परिचय

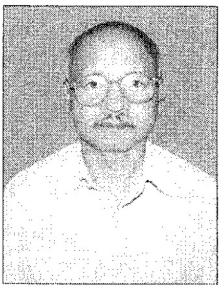

जन्म : 15 अक्तूबर, 1958, गांव : पबुड़ा, जमंग, सोड़ा, बानो, खुटखटी गांव : बेडाइरगी, जिला : सिमडेगा, झारखंड

प्राथमिक शिक्षा : आर.सी.मिशन, लचड़ागढ़, मैट्रिक : 1978, वर्ष 1978-79 मदर तेरेसा संस्था मिशनरिज ऑफ चैरिटी, कलकत्ता में धर्म बंधुओं के संग कलकत्ता में लंगड़ा-लूल्हा-कोढ़ वा लेफरोसियों के बीच सेवा कार्य। वर्ष 1979-83 : संत जेवियर्स कॉलेज, रांची में पढ़ाई। साहित्यक लेखन : 1999 - अबुअः दिसुम मुण्डा दुरंग् सिदा हटिंग्, 2004 - अबुअः दिसुम मुण्डा दुरंग्, 2012- दिसुम सुरूद् सुड़ा सगेन।

प्रभात खबर, रांची, रांची एक्सप्रेस, रांची, संदेश, पटना। आदिवासी समाज और जीवन दर्शन पर समय-समय पर लेख प्रकाशित। मुण्डा दुरंग, कहानी आद ओनोल अप्रकाशित। साहित्यक पुरस्कार : मुण्डारी कवि एवं गीतकार के रूप में, झारखंड सारस्वत सम्मान राहुल ठाकुर फाउंडेशन, जमशेदपुर और मंथन युवा संस्थान, रांची द्वारा प्रदत्त प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित।

शब्द गुनगुनाते हुए यदि रस और लय उत्पन्न होता तो जरूर ही आदिवासी समाज नृत्य करने लगता है। आदिवासी प्रकृति एवं पर्यावरण से जुड़ा हुआ गीत ही गायेगा। आदिवासी समाज जंगल, पहाड़, पर्वत, पशु पक्षी, जीव-जन्तु आदि देखकर ही गीत गाता हुआ आपको मिलेगा। उदाहरण के तौर पर हम इन मुंडारी शब्दों को गौर करें, जैसे- हड़ा-हुडु, ठड़ा-ठुडु, ठौ-ठौ, रगोड़-पगोड़, पोगोद्-पोगोद्, लेबेद्-तूबिद्, लेपेंग-लेपेंग्, रदा-रदा, हुदु-हुद, गुदु-गुदु, पुदुरूसु, हड़म-दुडुम, जनुम-जटा, रोगोड़-रोगोड़, रंगुड़-रंगुड़, हेसोकोद्, हुरतंग अड़ागुन, जलोम-कोलद्, हूदिर, पोटअः दिरि-दिरितन टका-टुकु, घोसो-घोसोन अड़ागुन, खटा-खुडु, खाई-खाई, तबड़ी, थोपियव, चटाकन, बयला-बतुड़, एचेम-चेड़ेम, चोगड़े गई, ओबोर-तबेर, चोंगोरोंद्, रेबेद्, हड़म हडा, बूढ़ी-ढ़ाड़री, ऐसे शब्दों पर मनोरंजन के लिए लय एवं रस का निकलना बड़ा कठिन है। फिर भी आदिवासी समाज इन्हीं शब्दों के बीच जन्म लेता, बढ़ता, पलता और अपने देश के माटी में समा जाता है। यही इसका दार्शनिक पहलू है। दुनिया कुछ भी बोले "जिन्दगी रे चिकन परवाह" अर्थात जीवन में क्या परवाह है। इन्हीं शब्दों पर हंसते-कूदते चलना ही बाद में अखड़ा का रूप लिया।

संवाद
301/ए, उर्मिला इनक्लेव, पीस रोड
लालपुर, रांची - 834001 (झारखंड)